श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः

श्री प्रिया प्रीतमाभ्यां नमः

श्री मत्यै चन्द्रकलायै नमः

श्री मत्यै चारुशीलायै नमः

श्री मन्मारुत नन्दनाय नमः

सीताराम वर्षोत्सव

जिसमें भगवान श्री सीताराम जी के वर्ष भर के बधाई, झूला, रास, शरद ऋतु, विवाह, होरी एवं जुगल झाँकी के पद आदि के उत्सवों श्री अग्रस्वामी जी, गोस्वामी श्री तुलसीदास जी, श्री कृपा निवास जी, स्वामी श्री रामचरणदास जी, श्री युगल प्रिया जी, श्री रसिक अली जी, स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी आदि रसिकाचार्यों की महावाणियों का संग्रह है।

संकलनकर्त्ता एवं प्रकाशक :-

श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

श्री हनुमान बाग, श्रीअयोध्याजी

परिवर्धित तृतीय संस्करण

संवत् २०६१, श्री चैत रामनवमी

प्रति १०००]   [न्यौछावर ४०) रुपये मात्र

रघुवंशिन्ह के गर्व गमौलनि, विरद के देलनि बिगारी हे।
'पदमलता' गुरुवर से डेरैलनि, सब छल देलनि उघारि हे ।।

पद ६

रघुवर दर्शन पवले सिय जी के फुलवरिया में।
परि के प्रेम भँवरिया में ना,
सिय के भूषण धुनि सुनि कान।
रघुवर भइले बड़ हैरान,
लागल छुटे पसीना भृकुटी तिलक कगरिया में ।।परि के०।।
बरबस कोशल राज किशोर,
भइले सिय-मुख-चन्द्र चकोर।
विजयी दुनिया के लुटि गइले दिन दुपहरिया में ।।परि के०
लखि के जग विजयी के हार,
हर्ष में सिय अलिगण बलिहार।
ईहे कहर मचवले रहलन जनक शहरिया में ।।परि के०।।
अनुपम रघुवर के छवि देख,
सिय के लगे ना नयन निमेष।
मनवा रमि गइले रघुवंशी राम संवरिया में ।।परि के०।।
प्रभु के नयन मार्ग से लाय,
मन के मन्दिर में पधराय।
उभ चुभ होखे लगली आनन्द सिंधु लहरिया में ।।परि के०
इहे फुलवारी के आनन्द,
परस्पर दोउ चकोर दोउ चन्द।

कुमुदिनी अलिगण पोषित भइली युगल अंजोरियामें ।।परिके०
मनोरथ सिय के हिय के जान,
भवानी दे दिहला वरदान ।
बचन नारद के होइहैं सत्य मिलन धनु धरिया में ।।परिके०।।
पाइके युगल दरश सम्वाद,
गुरु जी दिहलन आर्शीवाद ।
मनोरथ सुफल होय मण्डप के सात भँवरिया में ।। परिके० ।।
धनुष अब छन में जइहैं टूटि,
गाँठि सिय पिय के जइहैं जूटि ।
मिलहिं अब नारायण पहुना से भरि अंकवरिया में ।।परिके०

* धनुष यज्ञ *

पद १

धनुष मख बिच कौशलपति कुँवर सिरताज आते हैं ।
मुदित मग झुमते मनहुँ युगल गजराज आते हैं ।।
करोरों काम की शोभा निछावर कीजिये इनपर ।
स्वयं श्रृङ्गारहिं धनुधारी मनहु छबि छाज आते हैं ।।
सभा में आनकर राजैं जो राजे हैं सितारों से ।
प्रभाहत हेतु उनके यह दोउ निसिराज आते हैं ।।
भुजन में वीरता इनके स्वयं ऐसी झूलती हैं ।
मनहुँ विधि के पठाय ये धनुष के काज आते हैं ।।
कह्यो ऐसे सुअवसर पर न क्यों हरषै हृदय सबके ।
जो हरिजन के है सुखदायक सोई महाराज आते हैं ।।

दो०-सब मंचन ते मंच एक सुन्दर विसद बिसाल ।
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ बैठारे महिपाल ।।

पद २

धनुष मख देखन चलि सिय प्यारी ।
संग सखि सब सुभग सयानी, सोहै नवल तन सारी ।
छत्र चमर व्यजनादि लिये सब गावत मंगल चारी ।
नभ अरु नगर निसान प्रनव गन बाजि उठे चहुँधारी ।।
रंग भूमि आई जब सीता देखी सबै नर नारी ।
अंग अंग सजे अलि भूषण सिगरे कर सरोज लिये थारी ।।

पद ३

धनुष पूजन चलि सिया प्यारी ।
संग सखी सब सौज लीय हैं भरी कंचन की थारी ।
चलै दुहु दिशि चारु चामर चतुर चंचल वारी ।।
कोउ छबिली छपाकर सम लिये छत्र विशाल कारी ।
कोउ पिकदानहुँ पान दानहुं अतर दानहुं सुकुमारी ।।
कोउ लीय झारी कनक थारी व्यंजन नवल नारी ।
चामिकरन की छड़ी मनिगण छड़ी लीन्हेय नारी ।।
गह गहे गावत गीत मंगल कीय मंजुल मंजुवा नारी ।
कोउ बाल बिरद बखानती गति ठान गावती मुद भारी ।।

धनुष पूजन को जाना पद ४

पितु अयसु शिव धनु पुजन चली रंभ भुमि सिय प्यारी ।
छबि गन मध्य महां छवि जैसी, सखिन संग सुकुमारी ।।

मंजुल वाल मराल मन्द गति, गवनी अवनि कुमारी।
कर अरपन नैवेद्य फुल फल, अक्षत पान सुपारी।
मन मन्दिर के सिंहासन पर, राजत अवध विहारी।
नख शिख निरखि अलौकिक शोभा, चकित सकल नर नारी।
नरायण निज सुकृत सराहत जोड़ी युगल निहारी।

धनुष खंडन पद ५

तोरे धनुष बिना श्रम रघुराई।
अति लाघव से धनु कर लिन्हे, घन दामिनि चमकाई।
तोरत में न लगे एकहु छन, केहु दृष्टि न देखन पाई।।
करि दुई टूक डारि महि दीन्हे, प्रमुदित पुर समुदाई।
नृप रानिन को भयो परम सुख सिंधु पार लगाई।।
बढ़ेउ प्रेम उर सिय प्यारी के, सो सुख बरनि न जाई।

जयमाल पद ६

झुकि जावो तनिक रघुवीर ललि मोरी छोटी सी।
सिया सुकुमारी राजदुलारी नागरी परम सुशील।।
कबकी खड़ी है विचार करिये कनि दया करो रघुवीर।
परम सुजान शील गुण सागर नागर परम सुधीर।।

पद ७

पितु आयसु शिव धनु पुजन चली रंगभूमि सिय प्यारी।
छवि गण मध्य महाछवि जैसी सखिन संग सुकुमारी।।
मंजुल वाल मराल मन्द गति गावती अवनि कुमारी।
कर अरपत नैवैद्य फुल फल, अक्षत पान सुपारी।।

मन मन्दिर के सिंहासन पर, राजत अवध बिहारी।
नख शिख निरखि अलौकिक शोभा, चकित सकल नर नारी
नारायण, निज सुकृत सराहत जोड़ी युगल निहारी॥

जयमाल पद ८

लीजै पहिरि जय माला, सुनहु नृप दशरथ के लाला।
सिय सन्मुख निज शीश झुकावहु।
लखि सखि होवैं निहाला, सुनहु नृप दशरथ के लाला।
तोड़े धनुष तऊ झुकनो पड़िहैं।
पड़ा सखिन से पाला, सुनहु नृप दशरथ के लाला।
अबही ते तुम इतनो सकुचहु।
आगे कौन हवाला, सुनहु नृप दशरथ के लाला।
अकड़े खड़े रहोगे कब तक।
बनो न नखड़े वाला, सुनहु नृप दशरथ के लाला।
बिना झुके नहिं पैहो रघुवर।
वैदेही-सी बाला, सुनहु नृप दशरथ के लाला।
नारायण जो कहे सो मानहु।
तुम जीजा हम साला, सुनहु नृप दशरथ के लाला।

जयमाल पद ६

कंजनि करवा ललित सोहै हरवा।
पावै न गरवा, करति निहोरवा॥
नवो पिअर का श्याम सुन्दरवा।
बड़े हठ धरवा गुनै हिअरवा॥

हंसी होइहैं हमरवा झुकाय सिरवा ।

करति इशरवा झुकाई सखि थोरवा ।।

दिलाई मलवा, मोद छाई जय करवा, नभ में नगरवा ।।

जनकपुर आनन्द मनन पद १०

आज जग मंगल मोद छायो ।

छायो महामंगल मिथिला में विषम विसाद गयो ।।

मंगल परम सोहावन पावन निमि कुल आय भयो ।

मंगलमय सम्बन्ध अवध सो विधि सब भाँति दयो ।।

जनकपुर की पत्रिका पद ११

धनि धनि जनकपुर की पाँती अवधपुर की छाती जुराती ।

श्री गणेश श्री राम चरित को भई लेख सुरु आती ।।

उठि मन भाव भरत चक्रवर्ती पुलक गात भई छाती ।

अँगना अमाय अवधेशजू की अँगना अङ्गअङ्गकी तपन बुझाती

कबहुँ सीस अरुँ नैननि भावति कबहुँ हृदय से लगावति ।।

अवधपुरी को विदेहपुरी भाती वर से बराती मिलाती ।

'नारायण' को हिय हुलसाती सिय पिय जीय में बसाती ।।

भरत जी अम्बा पास जाना पद १२

सानुज भरत भवन उठि धाई ।

पितु समीप सब समाचार सुनि मुदित भाव गृह आई ।

सजल नयन तन पुलक अधर फरकत लखि प्रीतिसुहाई ।।

कौशल्या लिय लाय हृदय बोलि कहो कछु है सुधिपाई ।

सतानन्द उपरोहित अपने विरहुति नाथ पठाई ।।

खेम कुशल रघुबीर लखन की ललित पत्रिका लाई ।
दलि ताड़का मारि निसिचर मख राखि विप्र तिय तारी ।।
दै विद्या ले गये जनकपुर है गुरु संग सुखारी ।
करि पिनाक प्रण सुता स्वयम्बर सजि नृप कटक बटोरयो।।
रघुलाल राजसभा रघुबर मृनाल ज्योसंभु सरासन तोरयो।
यों कहि सिथिल स्नेह बन्धु दोउ अम्ब अंक भरि लीन्हें ।।
बार बार मुख चुमि चारु मणि वसन निछावर कीन्हें ।
सुनत सुहावनि चाह अवध घर घर आनन्द बधाई ।।
'तुलसीदास' रनिवास रहस बस सखि सुमंगल गाई ।

❀ विवाह उत्सव ❀

श्रीमिथिलाजी की महिमा पद १

परम प्रिय पावन तिरहुत देस ।
जहँ जनमी विदेहतनया श्रीसीता मंजुल वेष ।
जासों पावन भये रघुनन्दन रघुकुल कमल दिनेस ।।
जागयवल्क्य गौतम कनादमुनि कौसिक कपिल द्विजेस ।
अष्टावक्र ब्यास सुत शुकमुनि परम शान्त सुचि वेस ।।
आय विदेहराज सों पायल ग्यान तत्व अनिवेस ।
महामहिम बोधायन उदयन वाचस्पति गंगेश ।।
शंकर मण्डन गोकुल द्विज जहँ शिवसिंह सदृश नरेश ।
मंजुल चंचरीक विद्यापति गुँजत काव्य हमेस ।।

मंगल देवाराधन पद २

मंगल करन गणेश देव प्रथम मनाइये ।
देव श्रीरामलाल दुलहा सिया दुलहिन योग सुयोग बनाइये ।।
शंकर परम शुभंकर पद शिर न इये ।
देव सिय रघुवर के संयोग सुयोग दिखाइये ।।
गोर लागू गौरि गोसाउँनि पग परूँ प्रेम से ।
देवी श्रीरामलालदुलहा किशोरिदुलहिनिमोरिके राखोसदाक्षेमसे
वन्दौं श्री दिनकर देवा जो काया के नाह हे ।
देवा हम कहँ बेगि दिखाइये सियाराम ब्याह हे ।।
हाथ जोड़ि मांगो वर नाय माथ दीजिये श्रीरंगनाथ हे ।
देव तौ लौं रहैं सिया के सोहाग जबै लौं महि अहि माथ हे ।।
बिनती करौं ग्राम देवा ओ देवी दया करू हे ।
देवी सिया रघुवर के संयोग दिखाय आनन्द भरू हे ।।
देव पितर सन मांगहिं 'मोद' बिनती करि हे ।
देवा प्रगट असीसहिं मातु लेहिं अंचल भरि हे ।।

श्रीरामलला नहछू सोहर छन्द ३

आदि सारदा गनपति गौरी मनाइय हो ।
रामलला कर नहछू गाई सुनाइय हो ।।
जेहि गाये सिधि होय परम निधि पाइय हो ।
कोटि जनम कर पातक दूरि सो जाइय हो ।।१।।
कोटिन्ह बाजन बाजहिं दसरथ के गृह हो ।
देवलोक सब देखहिं आनंद अति हिय हो ।।

नगर सोहावन लागत बरनि न जातै हो।
कौशल्या के हरष न हृदय समातै हो ॥२॥
आल हि बाँस के माँड़व मनिगन पूरन हो।
मोतिन्ह झालरि लागि चहुँदिसि झूलन हो ॥
गंगा जल कर कलस तौ तुरित मँगाइय हो।
जुवतिन्ह मंगल गाइ राम अन्हवाइय हो ॥३॥
गजमुकुता हीरामनि चौक पुराइय हो।
देइ सुअरघ राम कहँ लेइ बैठाइय हो ॥
कनक खम्भ चहुँओर मध्य सिंहासन हो।
मानिक दीप बराय बैठि तेहि आसन हो ॥४॥
बनि बनि आवति नारि जानि गृह मायन हो।
बिहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायन हो ॥
अहिरिनि हाथ दहेंड़ि सगुन लेइ आवइ हो।
उनरत जोबनु देखि नृपति मन भावइ हो ॥५॥
रूप सलोनि तँबोलिनि बीरा हाथहिं हो।
जाकी ओर ब्रिलोकहिं मन तेहि साथहिं हो ॥
दरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो।
केसरि परम लगाइ सुगन्धन बोरा हो ॥६॥
मोचिनि बदन सँकोचिनि हीरा माँगन हो।
पनहि लिहे कर सोभित सुन्दर आँगन हो ॥
बतिया सुघरि मलिनियाँ सुन्दर गातहिं हो।
कनक रतनमनि मौर लिहे मुसुकातहिं हो ॥७॥

कटि कै छीन बरिनियाँ छाता पानिहि हो ।
चन्द्रवदनि मृगलोचनि सब रसखानिहि हो ॥
नैन विसाल नउनियाँ भौं चमकावइ हो ।
देइ गारि रनिवासहिं प्रमुदित गावइ हों ॥ ८ ॥
कौसल्या की जेठि दीन्ह अनुसासन हो ।
नहछू जाइ करावहु बैठि सिंहासन हो ॥
गोद लिहे कौसल्या बैठी रामहिं वर हो ।
सोभित दूलह राम सीस पर आँचर हों ॥ ९ ॥
नाउनि अति गुन खानि तौ वेगि बोलाई हो ।
करि सिंगार अति लोन तौ विहँसति आई हो ॥
कनक चुननि सों लसित नहरनी लिय कर हो ।
आनन्द हिय न समाइ देखि रामहिं वर हो ॥१०॥
कानन कनक तरीवन बेसरि सोहइ हो ।
गजमुकुता कर हार कण्ठमनि सोहइ हो ॥
करकंकन कटि किंकिनि नूपुर बाजइ हो ।
रानिकै दीन्हीं सारी अधिक बिराजइ हो ॥११॥
काहे रामजिउ साँवर लछिमन गोर हो ।
कीदहुँ रानि कौसिलहि परिगा भोर हो ॥
राम अहहिं दसरथ कै लछिमन आनक हो ।
भरत शत्रुहन भाइ तौ श्री रघुनाथक हो ॥१२॥
आजु अवधपुर आनन्द नहछू रामक हो ।
चलहु नयन भरि देखिय सोभा धामक हो ॥

अति बड़भाग नउनियाँ छूए नख हाथ सों हो।
नैनन्ह करति गुमान तौ श्री रघुनाथ सों हो ।।१३।।
जो पग नाउनि धोवइ राम धोवावइँ हो।
सो पगधूरि सिद्धमुनि दरसन पावइँ हो ।।
अतिसय पुहुँपक माल राम उर सोहइ हो।
तिरछी चितवनि आनँद मुनि मुख जोहइ हो ।।१४।।
नख काटत मुसकाहिं बरनि नहिं जातहिं हो।
पदुमराग मनि मानहुँ कोमल गातहिं हो।
जावक रचि कै अँगुरियन्ह मृदुल सुधारी हो।
प्रभु कर चरन पछालत अति सुकुमारी हो ।।१५।।
भइ निवछावरि बहु विधि जो जस लायक हो।
तुलसिदास बलि जाउँ देखि रघुनायक हो ।।
राजन दीन्हें हाथी रानिन्ह हार हो।
भरिगे रतन पदारथ सूप हजार हो ।। १६ ।।
भरि गाड़ी निवछावरि नाऊ लावइ हो।
परिजन करहिं निहाल असीसत आवइ हो ।।
तापर करहिं सुमौज बहुत दुख खोवहिं हो।
होइ सुखी सब लोग अधिक सुख सोवहिं हो ।।१७।।
गावहिं सब रनिवास देहिं प्रभु गारी हो।
रामलला सकुचाहिं देखि महतारी हो ।।
हिलि मिलि करत सवाँग सभा रसकेलि हो।
नाउनि मन हरषाइ सुगन्धन मेलि हो ।।१८।।

दूलह कै महतारी देखि मन हरषई हो ।
कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघ जनु बरखई हो ।।
रामलला कर नहछू अति सुख गाइय हो ।
जेहि गाये सिधि होइ परम निधि पाइय हो ।।१९।।
दशरथ राउ सिंहासन बैठि बिराजहिं हो ।
तुलसिदास बलि जाहिं देखि रघुराजहिं हो ।।
जे यह नहछू गावैं गाइ सुनावइ हो ।
ऋद्धि सिद्धि कल्यान मुक्ति नर पावइ हो ।।२०।।

हरदी बुकावन पद ४

मंगल आजु सुहावन अति मन भावन हे ।
जुगल संजोग बढ़ावन हरदी बुकावन हे ।।
मिथिला सुख सरसावन रस बरसावन हे ।
दम्पति पद दरसावन हरदी बुकावन हे ।।
परम प्रीति प्रगटावन लगन लगावन हे ।
लाल लली उबटावन हरदी बुकावन हे ।।
निरखत जग के छुड़ावन आवन जावन हे ।
मोद हिये हरषावन हरदी बुकावन हे ।।

तिलक चढ़ावन पद ५

आजु परम परमानन्द सजनी सोभा बरनि न जाय गे माई ।
चारों कुमरजी के तिलक चढ़ावन विप्र मंडली आय गे माई।।
गाइक गोबर अँगना निपावल मोतियन चौक पुराय गे माई ।
सजल कलस पर पल्लव दीपक वारि सुमंगल गाय गे माई ।।

गनपति गौरि गिरीस ग्रामसुर श्रीरंगदेव मनाय गे माई।
त्रिभुवन तिलकहिं तिलक देत लखि सुर नभ जय जय छायगे माई
मुख में पान नयन में काजर सुखमा अति सरसाय गे माई।
प्रमुदित मोद सकल दरसकगन चितवन चखनि बसाय गे माई॥

पद ६

आजु तिलक चढ़े रघुनन्दन के।
चारों कुँवर बैठे छवि छहरत होत सुमंगल तेहि छन के।
पीत जनेऊ पिताम्बर धोती पहिरावत सब लालन के॥
नारियर पान हरदि दधि दूर्वा द्रव्य भरल कर कंचन के॥
पढ़ि पढ़ि वेदक मंत्र पुरोहित देलनि रघुकुल चन्दन के।
स्नेहलता शुभ तिलक चढ़ावति रचि रचि दशरथनन्दन के॥

धनबट्टी पद ७

मिथिला आजु सुमंगल सजनी घर घर आनन्द छाज।
अवध नृपति के ब्राह्मण अयलनि लगन बांटन केर काज॥
लखितहि नगर छटा छकि गेलनि मंगल रचनाक साज।
भेंटि यथोचित आदर कैलथिन शतानन्द महराज॥
मंगल गान सुनावय लगलनि हिलिमिलि सखिन समाज।
हरदि धान दूबि फेंटि सुबटलनि गह गहै बाजन बाज॥
करि सनमान दान बहु देलथिन निमिवंसन शिरताज।
मोदलता मन मुदित समाति न आनन्द उर महँ आज॥

धनबट्टी पद ८

धान बाँटि अवध से आयल गावथि मंगल मिथिलानी।

अवधंक कुशल पूछथि हजमा से चतुर नारि छानि छानी ।।
कहु कहु हजमा नृप दशरथ के रहन सहन आनि बानी ।
केहन हुनक छैन यश परतिष्ठा वैभव सुख सनमानी ।।
सुनि हजमा गद्‌गद् भय बाजल कहब कि हम अज्ञानी ।
अवध अवधपति के यश वैभव भुवन चारि दश घहरानी ।।
सहित सुनयना नारि जनकपुर धिया योग घर वर जानी ।
सनेहलता कुल देवक आगाँ राखल धान हरषमानी ।।

मटकोर पद ९

आनन्द आज जनकपुर आनन्द आनन्द हे ।
माई हे सियाजू के आज मटकोर चहुँदिशि आनन्द हे ।।
आनन्द बाजन बाजत सखि सब आनन्द हे ।
माई हे आनन्द अमित अपार कुमरि चारु आनन्द हे ।।
उमा रमा ब्रह्माणि सबै मिलि आनन्द हे ।
माई हे गावति मंगल गीत सुनत मन आनन्द हे ।।
आनन्द फुल बरसावथि सुर सब आनन्द हे ।
माई हे चहुँदिशि जय जय होत श्रीनिधि आनन्द हे ।।

पद १०

कमला पूजन चलि जाति हैं सिय चारों बहिनी ।
संग में सुहागिन सुहाति हैं ।। सिय० ।।
कनक थारनमाँ महँ अच्छत चाननमाँ, गूथी माल सुमनमाँ ।
हरे हरे तुलसी के पात हैं ।। सिय० ।।
धूप दीप नैवेद विविध फलनमाँ, लै लै बहु पकवनमाँ,

व्यंजन बने हैं भाँति भाँति हैं ।।सिय०।।
लखि लखि शोभा सुरबरिसें सुमनमाँ,होय होय अंग पुलकनमाँ
गावैं निमिवंसी गुन ब्रात हैं ।।सिय०।।
चुनि चुनि गावैं गारी, उमगति बर नारी,नाम लै बारी बारी
मोद सुभ औसर सुहात हैं ।।सिय०।।

पद ११

सुभग सुआसिनि समदि सुनैनारानी,निज गोतनिन बुलवाई री
भूषन वसन सँवारि सुता चहुँ, कमला पूजन सिधाई री ।।
परमानन्द पूरि सब सहचरि, मधु स्वर पञ्चम गाई री ।
उमा,रमा,ब्रह्मानि आनि जुरि,मिलि सिय अलि बलि जाई री
बाजन बाजहिं अतिहिं सुहावन, शोभा बरनि न जाई री ।
पाँवरे पर परसत पद पंकज, दरसत ललित लुनाई री ।।
जाय निकट सिरनाय सबै मिलि, भाव सहित गोहराई री ।
श्रीकमला झट प्रगट असीसेउ, जयति जयति जय छाई री ।।
चारी कुँवर यथाविधि पूजेउ, मनभावति बर पाई री ।
लै तट माटि नाइ सिर चली सब, अंकुरी आदि बँटाई री ।।
सुरतरु सुमन मुदित सुर बरषहिं, लखि रहस्य तरसाई री ।
मोद सबै आनन्द अमाति न, मन बुधि चित न्यौछाई री ।।

पद १२

आइ करथि विधिवत वैदेही पूजन कमला तीर हे ।
नारि वृन्द मिलि मंगल गावथि के कहे कतवा भीर हे ।।

लोक लाज सँ सकुचित लोचन मुखमंडल गम्भीर हे।
हिय मन्दिर में रघुवर राजित पुलकित सकल शरीर हे ।।
जिनका चरन कमल पर निर्भर जल थल गगन समीर हे।
से सीया कमला से मांगथि, दीन जकाँ तकदीर हे ।।
विनय करथि पुनि पुनि कमला सँ तुव जस चहुँजुग थीर हे
स्नेहलता किरपा करु वर दे होथि हमर रघुवीर हे ।।

हरदी चढ़ावन पद १३

शुभे शुभे होय चहुँओर सकल मिलि गावथि हे।
मंगल हेतु जनक बाबा हरदी चढ़ावत हे ।।
जय जय होत चहुँओर सुयश घहरावत हे।
मंगल हेतु कुशध्वज बाबा हरदी चढ़ावत हे ।।
बाजन धुनि घनघोर आनन्द बढ़ावत हे।
मंगल हेतु श्री श्रीनिधि हरदी चढ़ावत हे।।
सुख उपजत चहुँओर सुमन सुर बरसत हे।
मंगल हेतु श्री लक्ष्मीनिधि हरदी चढ़ावत हे।
मंगल हरदी घोरावल मंगल मंगल हे।।
छिरकि छिरकि सुख पाओल मंगल मंगल हे ।।
छवि लखि प्रेम विभोर जनम फल पावथि हे।
मंगल हेतु श्री सनेह बाबा हरदी चढ़ावत हे ।।

उबटावन पद १४

आनन्द आजु महा मिथिलापुर शोभा बरनि न जाइ ए माई।
चारो दुलहिन के अंग उबटावन हिलि मिलि स्वामिनि आई।

गाई के गोबर अंगना निपावल नगजरि चौकी सजाई ।
गनपति गौरी मनाय यथोचित चारों कुँवरि बैसाई ।।
कंचन थार फुलेल ओ उबटन सुगंध दसो दिसि छाई ।
पंच सखी सुभ अंगन उबटहिं मधु स्वर पंचम गाई ।।
तन परसतहिं परा सुख सरसहिं हरष न हिये समाई ।
यह रहस्य लखि सुरतिय तरसहिं बरसहिं सुमन सिहाई ।।
उबटि अमल अंग करि दृग काजर वासित पान पवाई ।
मोद मगन इकटक छवि हेरहिं मन बुधि चित विसराई ।।

श्री किशोरी जु के अपटन पद १५

देखो देखो री सिया के अपटउनी, चतुर सहेलियो में ।
उठि रहे विनोद हँसउनी, चतुर सहेलियो में ।।
मणि मलसी भरि अपटन, लिय कर प्रमुदित अलिगन ।
मलि मलि गावत हँसत हँसावत,सिय जनु पात लजउनी ।
कोउ सखि अतर फुलेल लगावे, सरस मजाक उड़ावै ।
स्नेहलता अपटउनी गावे, सबके हिय उमगउनी ।।

आरतो किशोरी जु की पद १६

आरती जनकलली की कीजै ।
सुबरन थार वारि घृत वाती,तन निज वारि रूप रस पीजै ।
गौर बरन सुन्दर तन शोभा,नखशिख छवि नैननि भरि लीजै
सरस माधुरी स्वामिनि मेरी, चरण कमल में चितनित दीजै

श्रीकिशोरीजी का चुमावन पद १७

सिय लाडिली को सखियाँ चुमावति हैं,

मन्द मन्द मुमुकावति हैं ।।
दूबि धान धै धैं सुभ अंगनि तिरछी नजरिया घुमावति हैं ।
हैं कि सती कि सची, कि सरस्वती, विष्णुप्रिया,
कि रमा, रति हैं ।।
डाला परसि डुला सिर सेहरा, दिव्य दमक दमकावति हैं ।
'मोद के हियरा हलकत सजनी, जब तूँ हुमकि दबावति हैं ।।

सखो वारता पद १८

मिथिलापुर की नारि तोको श्याम ब्याहि लै जैहैं ।
सपन भयो यह मोहि सखी री मुनि संग आजुहिं ऐहैं ।।
तोरि धनुष जयमाल पहिरि उर तो संग भाँवरि लैहैं ।
सोच न कर अब जनक लड़ैती रघुबंसी वर पैहैं ।।
रास विलास प्रमोदबिपिन में करि नित प्रति सुख दैहैं ।
जब तैं भवन मान करि बैठे तब कर जोरि मनैहैं ।।
वेणी कल गुहिहैं फूलन सों जावक पगन लगैहैं ।
गोद जु लैहैं मोद बढ़ैहैं रचि रचि पान खवैहैं ।।
तेरे रंग पगिहैं निशिवासर तो छिन छिन न बितैहैं ।
रामसखे प्रभु रूप बावरो मुख निरखत ही रैहैं ।।

बारात आगवन पद १९

अवध नगरिया से चलती बरिअतिया हे सुहावन लागे,
जनक नगरिया भैले सोर हे ।।सु०।।
सब देवतन मिलि चलले बरिअतिया हे सुहावन लागे,
बजवा बजेला घनघोर हे ।।सु०।।

बजवा सबद सुनि हुलसे मोरा छतिया हे सुहावन लागे,
रोशनी से भइलबा अँजोर हे ।। सु० ।।
परिछन चललीं सब सखियाँ सहेलिया हे सुहावन लागे,
पहिरेली लहरा पटोर हे ।। सु० ।।
कहत रसिकजन दुलहा के सुरतिया हे सुहावन लागे,
सुफल मनोरथ भैले मोर हे ।। सु० ।।

परिछन पद २०

छं०-अति हरष राजसमाज चहुँदिसि दुंदुभी बाजहिं घनी ।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी ।।
एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ।
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ।।
दो०-सजि आरती अनेक विधि मंगल सकल सँवारि ।
चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि वर नारि ।।
विधुवदनी सब सब मृगलोचनि।सब निजतन छबिरति मदमोचनि
पहिरे वरन वरन बर चीरा । सकल विभूषन सजे सरीरा ।।
सकल सुमंगल अंग बनाए । करहिं गान कलकंठि लजाए ।।
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं।चाल बिलोकि काम गज लाजहिं।।

पद २१

रघुनन्दन आवहिं विलोकु सखियो,
नजर वाली अपनी नजर सम्हार रखियो ।
जादू वाली अपनी जदुआ सम्हार रखियो,
टोना वाली अपनी टोनमा सम्हार रखियो ।।

माथे मनि मौरवा विलोकु सखियो, न० ।। जा० ।। टो० ।
केशर की खोरवा विलोकु सखियो, न० ।। जा० ।। टो० ।।
नयननि कजरवा विलोकु सखियो, न० ।। जा० ।। टो० ।।
जुलुमी नजरवा विलोकु सखियो, न० ।। जा० ।। टो० ।।
कुण्डल हलनवा विलोकु सखियो, न० ।। जा० ।। टो० ।।
मंजु नासामनियाँ विलोकु सखियो, न० ।। जा० ।। टो० ।।
श्याम गौर जोड़वा विलोकु सखियो, न० ।। जा० ।। टो०।।
मोद चितचोरवा विलोकु सखियो, न० ।। जा० ।। टो० ।।

पद २२

दूलहा आये दुअरिया ए देखो देखो गोरिया ।
घोड़वा चढ़ल दुलहा आये दुअरिया, बाजा बजे घनघोरिया।।
झुँड के झुँड आवे हाथी अमरिया,जोड़ी बग्गी घोड़ा घोड़िया।।
हुम हुम हुमकत आवे कहरिया, लिये कारचोबी खड़खड़िया।।
रोशनी से राति लागे दिन दुपहरिया, छूटे रवाइसधराधरिया
परिछन करें साजि सिया महतरिया,प्रेम मगन फिरफिरिया।
दैके रुमाल दुलहा हँसे मुखमोरिया,मोद पै मारे नजरिया ।।

परिछन पद २३

पऊरि आये पाहुन परिछे चल री ।।
सुनो सुनो सुआसिनि, दम्पति की उपासिन, सहेलिनि, खवा-सिनि,प्रीतम प्रेम प्यासिनि,चलो लेवैं सब मिलि नयनफलरी ।।
सम्हारि ले री डलवा, हरदि दूबीदलवा, रही दधी सुमलवा, सिला सेदेला गलवा, चलो गावो मंगलवा सुकंठ कलरी ।।

उमा,रमा,सुभारती सची हिया उमगावती,दरस को तरसती बनाय वेष नरती, हिलिमिलि के गावैं जावैं बलि बलि री ॥
द्वै श्यामल गौरवा, हैं चारों चितचोरवा, जगत सिरमौरवा के सोहैं सिरमौरवा, ठगौरी ठौर ठौरवा विलोकु भल री ॥
परिछै सब सासु री,कि हुलसि हुलासु री,हैं रोके प्रेमआँसु री हैं होस न हवासु री, मोद-प्रमोद पागी है न परै कल री ॥

मंगलगान पद २४

मंगल आजु जनकपुर मंगल मंगल हे ।
मंगल तनेऊ वितान गान धुनि मंगल हे ॥
मंगल बाजन बाजहिं पुर नभ मंगल हे ।
मंगल वस्तु लए साजहिं मिलि सब मंगल हे ॥
मंगल मन्त्र उचारहिं महिसुर मंगल हे ।
मंगल तनु धरि धाय उमगि जनु मंगल हे ॥
मंगल दुलहिनि चारु दुलह चारों मंगल हे ।
मंगल ब्याह उछाह मोद प्यारी मंगल हे ॥

पद २५

आजु सियाजू के ब्याह की लगनियाँ ए सखी घर घर मंगल, बाजन बाजै घनघोर। आय बरियात साजि विविध बाहनियाँ ए०, रघुकुलमनि सिरमौर ॥ सुनि न परत सखी बतियाँ अपनियाँ ए०,जुरे अगवनियाँ अथोर ॥ लखि बरषावैं बहु सुरन सुमनियाँ ए०, जयति जयति करैं सोर ॥ मोद उमगि गावैं प्रेम मगनिया ए०,छवि छकि छकि तृण तोर ॥

पद २६

आजु जनकपुर घर घर मंगल आनन्द अधिक उछाह गे माई।
सजि बरियात सुपुत्र बिआहन ऐला अवध के नाह ॥
हाट बाट महँ चहल पहल छायल उमगि सबहिं उर माह।
रानी सुनयना के जाई जुड़ाउनि कैलनि सुखी सब काह ॥
चारिउ कुमरि जेहने छथि तेहने बर चारिहुँ रूप धारि।
जानि परइ जनु चतुर बिधाता रचलनि सोचि बिचारि ॥
हम सब प्रगट भाग्य बस भेलहु मिथिला अम्बाक गोद।
कोहबर बैसि सरस सुख लूटब प्रमुदित मोद विनोद ॥

पद २७

जानत छैली सुनत छैली जायव जनकपुर ग्राम रे।
बहीनी बेची सुपारी लैते से हो करते दान रे ॥
हमतो मंगली आजन बाजन सिंघा काहे लोले रे।
द्वररे बरतिया साले तु जनकपुर के हसोले रे ॥
मगनी के लालकी पालकी झलक देखौले रे।
द्वररे बरति साले तु जनकपुर के हसौले रे ॥

हलचन पद २८

दो०-आवत जानी बरात बर, सुनि गहे गहे निसान।
सजि गजरथ पट चर चतुर लेन चले अगवान ॥
आज जनकपुर घर घर हलचल, चहल पहल चहुँओर हे।
आजु सुदिन शुभ लगन सिया के, सबजन प्रेम विभोर हे ॥
आवत जानि बरात अवध सें सुनि बाजन घनघोर हे।

परम हुलासी मिथिलावासी करत सराती सिंगार हे।
गज गज रथ बहु बाजि रथ पद चर चले करोर हे ।।
वाहन विविध अनेक पालकी गिनत मिलत नहीं छोर हे।
छैल छबीले चलं सराती करत कुलाहल शोर हे ।।
बाजन बाजत परम सोहावन समारोह नहि थोर हे।
नगर नारि संग करत सुनयना परिछन द्रव्य बटोर हे ।।
स्नेहलता सबके हिय लतरे आवत अवध किशोर हे ।।

पद २९

देखु देखु सखि रामजी के बारात आवेला।
हाथी घोड़ा ऊँट पर नगारा बाजेला ।।
लाल की वो पालकी सजल आवेला।
घोड़वा पर दुलहा मुसुकात आवेला ।।
आशा सोटा झंडा फहरात आवेला।
ताके पिछे साधु के जमात आवेला ।।
सखि छोटे छोटे दुलहा के जमात आवेला

अवधपुर से बरात चलना पद ३०

देखी न ऐसी बरातजी, जैसी रघुवर तुम्हारी।
समधी एक नाम के दशरथ, समधिन है शतसात जी, तुम्हारी महतारी ।। एक एक रथ पर सत्तर सत्तर, घर भीतर की बात जी, यह अजब सवारी ।। बाहर एक रथ ऊपर दशरथ वंश भगीरथ जात जी, सुनि जाऊँ बलिहारी ।। चली बरात देश कौशल ते, जनक नगर को जातजी, मंगलोग निहारी।

पुछै लोग कहाँ है दुलहा, सुनि अवधी सकुचात जी, का कहिये विचारी । पहिले से वर ससुरारी में बैठे, सुनि सब हँसत ठठातजी,दै दै करतारी । ऐसी बरात भुतो न भविष्यति जस यह भई है हठात जी,सब जग से न्यारी ।। अस बिनोद प्रति नगर गाँवपुर, जे मग मोहि भेंटात जी । प्रमुदित नर नारी । वास करत मग प्रति पड़ाव पर, करत पयान प्रभात जी, उर आतुर भारी । कब मिलिहौं श्रीराम लखन सों, पुलक प्रफुल्लित गात जी, लखि अवध बिहारी । मिथिला-निन के वचन व्योग युत, सुन रघुवर मुसुकातजी, ससुरारी की गारी । 'नारायण' सियाराम व्याह यह, सकल भुवन विख्यातजी, रसिकन सुखकारी ।

पद ३१

सुनु सुनु सखिया संग कि सहेलिया देखन चलु ना । रघुवर बरियतिया ।। घोरवा नचावत आवै डगरि डगरिया वांधि लिहले ना,सिर टेढ़ी रे पगरिया ।। साजि-२गज तुरंग; सवरिया से, आई गइले ना ।। आजु मिथिला नगरिया, कहत रसिक लखि श्याम की सुरतिया सुफल करु ना ।।

मिथित्रा बरात समय के पद ३२

सियाजु के होइहैं राम सजन मां घर घर बाजत बधाई ।
गली गली में बालक उछले गावे दय दय ताली ।।
आज बनेगें राम सियाबर कालिह से पढ़ वेन गारी ।
मिथिलानगर के नवयुवक मंडली सजधज चले सराती ।।

जाये मिलब अवध वालो से, कैसन लय लन बराती ।
बृध समाज आज मिथिला के जनक निकट बैठारे ।।
उचित सलाह देत सुखकारी जय जय बन्दि उचारे ।
घर-२ वन्दन वार पताका अलिगन कलश सजाये ।।
'स्नेहलता' अपना घर उतसव जे भावे से गावे ।।

पद ३३

लखु हे सहेली लखु लाड़िली के वर हे ।
जेहने सलोनी सिया तेहने सुघर हे ।।
माथे मुंजु मोर जग मगे मणी जर हे ।
गाल खोर केशर भृकुटि दिव्य तर हे ।।
बड़ बड़ आखि जहरावल जादु भर हे ।
जोहतहि जियरा करत बेखबर हे ।।
कहर मचावोल आंखि सकल सहर हे ।
स्ववस कैलक नय वांचे नारि नर हे ।।
मंद मंद हँसि फाँसे प्रेमीन के गर हे ।
नखशिख अनुपम 'मोद' मुदकर हे ।।

पद ३४

कहमां अयला दुल्हा एहन लुल्ह लुहार गे माई ।
अंग-२ ज्योति जागे अति जग मगोर गे माई ।।
शिरपै बिराजै मोर तुर्रा कलंगी दार गे माई ।
चिकनारे चमकारे जुल्फ घुँघरार गे माई ।।
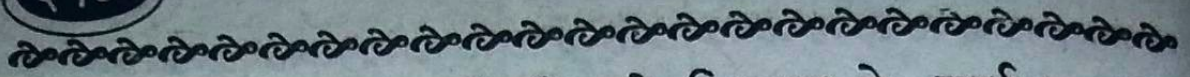
केशर के खौर उचे चिकने लिलार गे माई ।
मोहे धनु नयना तीर करे हिया पार गे माई ।।
गोल गोल गाल पर कुँडल उलटार गे माई ।
ओट रस पिके डोले बुलकन मत्तवार गे माई ।।
दुतिया के ज्योतिया पर विजुरी न्योछार गे माई ।
मुमुकन मारि भरके मोदिया बेकार गे माई ।।

पद ३५

आजु मिथिला नगरिया निहाल सखिया,
चारों दुलहा में बड़का कमाल सखिया ।।
माथे मणि मौरिया कुण्डल सोहे कानवाँ ।
कारे कारे कजरारे जुलुमी नयनवां,
लाले लाल चानन चमके ऊँचे भाल सखिया ।। चारों० ।।
साँवर साँवर गोरे गोरे जोड़िया जहान हे,
अँखियाँ ना देखलस ना सुनलस कान हे,
जुग जुग जीवे जोड़ी बेमिसाल सखिया ।। चारों० ।।
गगन मगन आजु मगन धरतिया,
देखि देखि दुलहा के साँवरी सुरतिया
बाल वृद्ध नरनारी सब बेहाल सखिया ।। चारों० ।।
जिनका लागी जोगी मुनि जोग जप कइले,
सेही हमरा मिथिला में पाहुन बनके अइले,
इहवाँ लोढ़ा से सेकाई इनकर गाल सखिया ।। चारों० ।।

जनवासा में पद ३६

अइसन दुलहा ना अइलन नगर में ।।
मिथिलापुर के नर नारी सब चरचा करत घर-घर में ।
भाल तिलक कान कुण्डल शोभे मउरी सोभतवा सर में।।
जामा जोड़ा पीताम्बर पहिरले गहना वा गतर गतर में ।
अइसन स्वरूप कहीं देखलीना सुनली सागर समैलन गागर में
सियाजू के नाते पाहुन होइ गइलन नाता जुटल छन भर में
कहत 'भिखारी' अबना निकलिहन गरिगइलन भितरी नजरमें

मातृ का पूजा पद ३७

पुरहित चतुर सतानन्द मन्त्र पढ़ावथि हे ।
मातृका पूजथि रानि परम सुख पावथि हे ।।
सुरभी के गोबर मँगावथि ठाँव करावथि हे ।
पूजि प्रथम गणराजहिं कलश धरावथि हे ।।
पंच देवि पूजि रानि सुरक्षिका मनावथि हे ।
पूजथि निज कुल देवि बहुत गोहरावथि हे ।।
तियगण मंगल गावथि प्रेम जगावथि हे ।
स्नेहलता ऐहो पूजन गावि सुनावथि हे ।।

जनवासा में धुरछक पद ३८

धुरछक की कलशा लयके चलतीं सुआसिनि ए रसप्रीती माती, सजि लीनी सोरहो श्रृंगार ।। पीतरंगसारी अंग सुबरन धारी ए०, भाल लाली सिन्दुर सँभार ।। मांगलिक बाजन की गति पै पग धारे ए०, गान तान लाजें सुरनार ।। मङ्गल

सुनाती उमगाती लखे आती ए०, रघुबंशिन सरदार।। भरि भरि डलवा असरफी लए दीनी ए०, मोद चलीं गावति जय जयकार ।।

कन्या निरीक्षण पद ३९

सुन्दरि नवेली ठाढ़ि धुरछक गावथि हे सुहावन लागे, सोने के कलशिया लेल माथ ।। आनन्द बधावा बाजे नृप जनवासा हे०, दशरथ विराजथि सुत के साथ । सुनल अवधपति दुलहा के स्वागत हे०, कलशा में देल मानिक सात । तखन वशिष्ठ मुनि देल अनुशासन हे०, करु जाय सियाके सनाथ । गुरुके सनेहमय सुनि वर वचना हे०, चारु भाई चलला रघुनाथ ।।

कन्या निरक्षन भैसुर पद ४०

एही वर भैसुरा के कइसे देऊँ गारी हे ।
भषन वसन लायो बहुत सँवारी हे ।।

माँग टीका शीश फुल नथ युत भारी हे झुलनी झमकदार नासा मणि प्यारी है ।। कर्ण फुल कुण्डल झुमक दुति न्यारी हे । कण्ठा गोप सतलरी हँसुली हजारी हे ।। दुलहिन जोग लायो सुन्दर मनहारी है चन्द्रहार है कल करत उजियारी हे ।। बाजु बन्द विजायेठ सु झुब्बा झलकारी हे । किंकिनि कमर कस सुन्दर पेटारी हे ।। कड़ा छड़ा पायजेब पैंजनी सुधारी हे । सारी देखो मोतियन झालर किनारी हे ।। कनक सिहोरा जामें लाल सेन्दुर धारी हे। रामा देखि मुदित सकल नर नारी हे ।।

(जनवासा से दुलहा का अन्दर आगमन) पद ४१

घोड़वा छमकावत आवै साँवला पहुनमां, देखु सहेलिया मोरि हे, मौरिया की अजब बहार ।। ऊँचे रे लिलरवा पर लटकैं लट घुँघुररवा देखु० जुलमी नयनमां कजरार ।। चिकने कपोलवा पर कुण्डल करैं किलोलवा देखु०, ओठवा अनुठवा अरुणार ।। बुलकनि की हुलकनि लखि लखि हुलसेला मोरा छतिया देखु०, मुसुकनि बनाबेला बेकार । मोद न रुकिहैं संग रहि रैन दिन बिलोकिहैं देखु० लोक लाज कुल कानि छार ।

पद ४२

देखो देखो देखो सखी सांवला पहुनमाँ हे ।
जिनका देखैते सखी मोहि जात मनमां हे ।।
मिथिला की असही दुसही डारइ ना कहीं टोनमां हे।
ताते सहेली झट से दै दै दीठोनमां हे ।।
घोड़वा गुमान भरे करइ फनफनमाँ हे ।
जौहर जड़ित जीन जेवर झनझनमाँ हे ।।
झुकि झुकि चुचकारै झूलैं मौरन छोरनमां हे ।
मानो दिव्य घन पर नाचैं बिज्जु गनमां हे ।।
भाल बिशाल पर तीन रेखनमां हे ।
मनहुँ जनावइ तीनू लोक ना अइसनमां हे ।।
भौहें कमनियाँ सखिया नयना चोखे बनमां हे ।
मन मृग आपे आय होत कतलनमां हे ।।

गोल गोल गाल पर डोलइ अलकनमां हे ।
मानो झुकि झुकि पूछइ केहि मन ठेकनमां हे ।।
मुसकनि मद पीके डोलइ बौरी बुलकनमां हे ।
बोलिया अमोलिया करइ अंग-२ पुलकनमां हे ।।
मलवा अलबेलवा झुकि झुकि देवइ सिखनमां हे ।
आओ आओ शरणियाँ इनके चाहो यदि कल्यनमां हे।
जन के हित करते करते बाढ़ल कर कमलनमां हे ।
अँखियाँ में रहते रहते श्याम भये रंगनमां हे ।।
धन धन किशोरी मोरी जिन लागी ललनमां हे ।
आपहीं से आय बने मिथिला मेहमनमां हे ।।
जुग जुग जीवइ सखिया दुलहिन दुलहनमां हे ।
मोद मंगल गावइ बरषइ सुमनमां हे ।।

पद ४३

अवध नगर से जनकपुर आये दुलहा सुन्दर हे ।
मदन मोहन छवि निरखत लिये हिये अन्दर हे ।।
अनुपम सोहे सिरमौर भूषण पीताम्बर हे ।
अलक कुटिल भहुँवाँ धनु सम कमल नयन सर हे।
साजि साजि कंचन थार लिये परिछन्न केरि नारी हे।
आरती उतारैली सुनयना रानी बीरी दै दै जादू डारी हे
जोगी जन जतन करत हारे बस नाहीं भये हरि हे ।
परम सनेह करि जन हरिनाथ ताही बस करि हे।

पद ४४

लखो दशरथ कुमार बनरा बने आते हैं।
रंगीले नर्म सखा संग में सुहाते हैं ॥
सवारी धूम धाम तुरंगों पर साज सजी।
गयन्द मस्त मन्द मन्द चले आते हैं ॥
छरी औ छत्र चँवर बिजनादिक कर लीन्हें।
अनेक यन्त्र बजत बंदि सुजस गाते हैं ॥
अहै धन भाग सकल मिथिला नगर बासिन की
बिलोकि तन मन धन वारि वारि जाते हैं ॥
यही अभिलाष मधुपअली श्रीसियाजू की।
बना रहे सुहाग सुख यही मनाते है ॥

पंच संबद धुनि मंगल गाना। पट पाँवड़े परहिं बिधि नाना ॥
करि आरती अरघ तिन्ह दीन्हा राम गमन मंडप तब कीन्हा

मण्डप गमन पद ४५

उतर जावें यहीं लालन चले पैदल लली आंगन।
यहाँ से हो गमन पैदल चलें पैदल लली आँगन ॥
अवध से आये मिथिला में कहाँ थी पालकी उस दिन।
न ठगिये की धनी हम हैं चलें पैदल लली आँगन ॥
सवारौ आपके जितने बराती लोग आये हैं।
सभी हैं, गैर से मँगनी चलें पैदल लली आँगन ॥
चले आते सभी पैदल शरम की बास ही क्या है।
समझ ही गये समझ वाले चलें पैदल लली आँगन ॥

ललन सुनि स्नेहमय चुटकी उतर गये पालकी तजकर।
मसल होने लगे उस दम चलें पैदल लली आँगन ॥

आगे बढ़ने से पूर्व पद ४६

एकटा बात हमर कने सूनि लिय, इविधि कए आगां पैर दिय
अइठामक ई विधिक प्रसिद्धि अछि,माय बहिनि के नाम लिय
पितु सँ सौगुन माय अधिक छथि, अपनहुँ देखु विचारि हिय।
बिना नाम जनने जननी के, गौती कोना गितगाइन तिय।
मोद मंद हँसि कहलनि मधु स्वर,ताकि तिरछि मुसुकाथि सिय

अन्दर प्रवेश पद ४७

चलु धीरे धीरे लालन लली के अँगना।
ई अँगना जनि बुझू अवध के दौड़ल चलब मन मानत जेना।
कंचन के गच पर मरकत कियारी,गमला सजल सोभेहीरापना
बेली चमेली-गुलाब गुलदाउदी,लाखोंकिसिमकेफुलायल हीना
रहथि बसंत सदा मिथिला में,तीसों दिवस बारहों महीना ॥
मध्य सतह मणिमंडप राजित, तीन लोक में उपमा बिना।
स्नेहलता लखि कुमर सराहथि,केवल अँगनमां के ई रचना ॥

पद ४८

आबू आबू आबू दुलहा अंगना हमार हे।
अंगना में होयत दुलहा विधि सब तोहार हे ॥
एना किय चलै छी दुलहा सासुजी के घर हे।
सासु सब हँसि देती चालि देखि तोंहर हे ॥
नहुँ नहुँ चलू दुलहा छोरू डेग नम्हर हे।

सरहज दुलारी लेती नाक पकरि हे ।।
चुनि चुनि सखिया सब पढ़ लगलनि गारि हे ।
चलहु न सिखौल कनि दुलहा के बहिनि छिनारि हे।
सारी के ग़ारी सुनि हँसे चारू वर हे ।
रीझल कनकलता दुलहा के ऊपर हे ।।

पद ४९

रघुबंशी रसिया रसहिं रसे । चलिये मंडप सुख रस सरसे ।।
धरत चरण पांवड़े करिवर से, क्या जननी जनमाय करि से ।
लालन सुनि चले डेग नम्हर से, जाय मनहुँ ब्राजी वर से ।।
चारों कुमर भये ठाढ़ अटर से, जनु गरलाय भये गिरिवर से।
मोद हारि हँसि गवने ठहर से, मुखनि रुमाल दिये कर से ।।

पद ५०

आबू आबू आबू सखि देखु भरि नयना दुलहा श्यामला, मुखवा पर धैने छथि रुमाल ।। चानन ललाट शोभे माथे मणि मौरिया दु०, जुलुमी जुलुफिया घुंघुराल ।। सुन्दरी धिया के जोग सुन्दर सलोना दु०, जोड़ी बिधि रचल कमाल ।। एहन जमाय पावि धनि आइ मिथिला दु०, धनि धनि जनक भुआल ।। निरखि स्नेहलता गावे एहो झाँकी दु०, आजु भेल जीवन नेहाल ।।

अन्दर परिछन पद ५१

एहि विधि राम मंडपहिं आये । अरघ देइ आसन बैठाए ।।

छंद-बैठारि आसन आरती करि निरखि बर सुख पावहीं ।
मनि बसन भूषन भूरि बारहिं नारि मंगल गावहीं ।।
ब्रह्मादि सुरवर विप्र वेष बनाइ कौतुक देखहीं ।
अवलोकि रघुकुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीं

आरती विवाह समय की पद ५२

करिये शुभ आरती युगलवर की ।
मिथिला भाग सोहाग जनक को,
हिय जिय सिय पिय छवि धर की ।।
सिय तन चूनरि चटक विअहुती,
पिय पट पीत सुजामा जर की ।।
चंदन माल पान मुख लाली,
ललित ललाम युगल वर की ।।
'सरस सन्त' दम्पति सम्पति यह,
मिथिला पुरी सुघर सुघर की ।।

आरती दुलहा पद ५३

सखि हे आरती उतारू रघुनन्दन दुलहा के ।
हीरा के हार मोर लर मोती हे,चपकन चारु वियहुती धोती देखु चरण महावर कर कंगन दुलहा के ।।सखि०।। नयन कजरवा अलक घुघुराली काली, कनवाँ में कुण्डल सोहै ओठवा पै पान की लाली । चमके लिलारा पै लाल चन्दन दुलहा के ।।सखि०।। मन्द मुसुकान भोंह तिरछी कमान हे। जाके कोई उपमा ना सकल जहान हे ।। कोरि काम छवि

बारीं अंग अंगन दुलहा के ।।सखि०।। धन्य धन्य मिथिला के सुकृत महान हे। लाड़िली कृपा से पवली अइसन मेहमान हे । अइसन बाँधु नाही खुले गठबन्धन दुलहा के ।।सखि०।।

परिछन पद ५४

मंगल आजु सम्हारीयो हे कहुँ नजरी न लागे ।
अरिछि परिछि रानी कहति सखिन से उतारियो । हे कहु डोलने न पावे, हरकि हरकि चलु हमरे ललाजी से देखियो हे कोई बोलने न पावे, सिद्धिजी आगे निज अँचरा बिछावे कहैं लालजी यह फटने न पावे ।। फाटी जो अँचरा हमारी कही तो बहिनियाँ तोर कहि बिकने न पावे ।। चन्द्रकला कहे भौजी हमारी सहारियो हे, प्रेम मोहने न पावे ।।

पद ५५

सुनु सजनी हमार दुलहा आयेल छथि द्वार, भीर लागल अपार हाला डाला लेहि न संभार के सखी दुलहा निरेखु भरी नयना देखु केहन छथि श्याम सलोना। चारो बर लुलु-हार कोटिन काम न्योछार अनुपम छैन श्रृंगार। चलु दुलहा नीरेखु सज धज के ।। देखु माथे मणिन की मौरीया, माथे शोभे केशर की खौरीया, कारी केश घुँघरार मौरिक छोर करे मार नाशामणी से तकरार लखि लखि जिया मोरा हुलसे सखि नख सिख से सुन्दर श्रृंगार छैन । चारो दुलहा पर सब बलिहार छैन । अछत न्योछार निज दृष्टि के सुधार प्राण प्रीतम हमार शुभे गाऊ हिल मिल के दधि

केशर लगाऊ शशि भाल पे ले पाथर से सेदु बर के गाल पे कहियो गाल न बजायब आहों सबसे लजायव कोई उपराग न सुनायव नियम छैन पाहुन ससुरार के सखि दुलहा के पान पवाऊ हे। सखि दुलहा के इत्र सुघाऊ हे। गले दियौ न फुल माल, चारो प्यारे रघुलाल के, देखि भेली सब निहाल सखि धन धन ई वासी नगर के बर के आखीन में काजर लगऊ हे। ई नयना के हिया में बसाऊ हे। राई लौन न्योछार कोऊ टोना न चलाऊ वर के आंगन ले आऊ सखि निज कर घर के कहे सखि 'कनकलता' गाऊ हे तखन पाहुन के आंगन ले आऊ हे।

पद ५६

आनन्द आनन्द आजु शुभे हो। पूरण भये मन काजु शुभे हो।
देखु दूलह रघुनन्दन शुभे हो। सबहिन को सुखकन्द शुभे हो।
रसिकजनन कहँ प्रान शुभे हो। सुषमा शील निधान शुभे हो।
दुर्वाक्षत न्योछावरु शुभे हो। दृष्टि सुधारि निहारु शुभे हो ॥
दधि केशर दिल भाल शुभे हो। सुख लूटिअ अलिमाल शुभेहो
नील दिठौना लगाऊ शुभे हो। राई लवण न्यछाऊ शुभे हो ॥
अंजन आँजिय आँखि शुभे हो। चितवनि लिय हिय राखिशुभेहो
बीड़ा सरस पवाऊ शुभे हो। अतर सुघ्रान कराऊ शुभे हो ॥
सिलवन से दिय गाल शुभे हो। लखिलखि होई निहाल शुभेहो
धन्य सिया सुखधाम शुभे हो। धन्य ई मिथिला ग्राम शुभे हो
जिन प्रसाद हम वास शुभे हो। पाय घरहिं घनश्याम शुभे हो।

लए चलु आँगन माँहि शुभे हो । चारो सुघरवर काहि शुभेहो मोदछकी चली संग शुभे हो । उमगति पुलकित अंग शुभे हो।

पद ५७

अलबेलो दुलहा रघुनन्दन देखत हीं सबके मन में बसि गये । कुसुमी पाग मोर शिर सोहैं कज्जल नयन पान मुख लसि गये । घुँघरारी अलकैं लटके शिर, पीत दुपट्टा पै मन बसि गये ।। पीताम्बर शुभ कटिमें राजे, चरन महावर मोतियन गसि गये । द्विज दुनियां मणि यह छवि निरखे, सो सो प्रेम के फन्दा में फँसि गये ।।

पद ५८

राजकुमर वर चार री सखियाँ छवि लखि ले ।

माथे मणिन की मौर मनोहर, झलकत झालरदार री, दीठोना निरख ले ।। भाल विशाल केशर दधि अक्षत,कमल नयन कजरारी री, चितवनि अमि चख ले ।। ललित कपोल कलित कल कुण्डल, बुलकनि हुलनि बहार री, हिय हेरि हरख ले ।। रूप यही सखि नयननि को फल, नाम इनहिं के सार री, जपि जीह परख ले । सीय कृपा यह मोद मिले तोहि, रघुवर प्राण अधार री, अब आँखों मे रख ले ।।

मण्डप परिकमा पद ५६

सुख लीजै सुख लेवैया सुखसार आप आ गये ।
मिथिलेश आँगने में ह्वै चार आप आ गये ।।

चारों के गर में चादर लक्ष्मीनिधि धर सादर ।
सत फेर फिराते ही सर्वत्र साफ छा गये ।।
जिसका है सब पसारा जो सारहुँ को सारा ।
सो प्रेम वश विचारा कर सार के बँधा गये ।।

पद ६०

चादर पकड़ि एहि बरवा के सखी वेदी घुमाऊ ।
कहीं नजर न लागे दुलहवा के सखी टोना बचाऊ।
कहीं ठेसो न लागे दुलहवा के सखी धीरे चलाऊ ।
कहीं मोहने न पाये ललनमां के झट बीध कराऊ ।
आनन्दलता एहि बरवा के सखी वेदी घुमाऊ ।।

दुलहा के द्वारा कन्या निरीक्षण पद ६१

देल कमल कर पल्लव आमक पल्लव हे ।
चिन्हू बाबू चिन्हू धनि आपन देखु जनि भूलब हे ।।
रघुकुल के एक रीति तकर सुधि राखब हे ।
हेरथि नहीं परनारि से अखनहिं जानब हे ।।
चारु ललन चख चंचल चित करइ डगमग हे ।
आइ असल थिक जाँच नृपति घर तिय लग हे ।।
यद्यपि चारु कुमार कुलक पति राखल हे ।
सखि सभ देल हहार ललन कहि हारल हे ।।
स्नेहलता हँसि कहल सतत हारि जायब हे ।
मिथिलापुरी के व्यवहार पार नहिं पायब हे ।।

पद ६२

धन्य धन्य आजु केर अति शुभ दिनवाँ हाय रे सखिया। रहि रहि जियरा हुलसाय ।। उमड़ि घुमड़ि घन साँवर आयो, लेहु मन मोर वा नचाय। सुन्दर पहुँनवाँ के छवि लखि आजु अब मोहि कछु ना सोहाय ।। कवन सुकृत कइली मइया सुनैना धिया ऐसन पवली जमाय। सिया के सोहाग विधि अचल बनाके, गावत करील हुमगाय ।।

पद ६३

सुघर दुलहा के मोहनी मुरतिया हे।
सजनी नयन भरि निरेखु सुरतिया हे ।।
कंचन मउर सोभे दामिनी सी जोतिया हे।
कानन कुण्डल सोभे गरे गज मोतिया हे।
जामा जरकसी सोभे डारे पीत धोतिया हे।
चरन महावर सोभे साँवर सुरतिया हे।
निरखि मंगन भेली, सारी बरअतिया हे।
करहु सुफल सब अपनी नजरिया हे ।।

पद ६४

हमर अपने किशोरी छथि सुन्दर एहन।
नहिं पायब कतहुँ हेरू चौदह भुवन ।।
हिनका संग में पाहुनजी लगै छथि केहन।
जेना राति इजोरिया में नील गगन ।।
हिनका देखिते लालन जी मोहैला एहन।

भूलि गेला अवधपुर कें मंगल भवन ।।
सखि हे मन मुसुकाइ छथि नृपति सुवन ।
रूप लखिते मेलनि मन आनन्द मगन ।
'पटरानी' सखी के सुफल भेल जीवन ।
कहाँ पबितहुं एहन अनमोल रतन ।।

एहि विधि सीय मण्डपहिं आई। प्रमुदित साँति पढहिं मुनिराई।।
तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू। दुहुं कुलगुरु सब कीन्ह अचारू।।

❀ मंडप पर दुलहिन का आगमन ❀

पद ६५

समउ बिलोकि वशिष्ठ बोलाए। सादर सतानन्द सुनि आए ।।
बेगि कुंवरि अब आनहु जाई। चले मुदित मुनि आयसु पाई।
सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहिं चली लवाई ।।
चलि ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुन्जर गामिनी ।।
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति वर बाजहीं ।।
दो०–सोहति बनिता वृन्द महँ, सहज सुहावनि सीय।
छबि ललनागन मध्य जनु, सुषमा तिय कमनीय ।।
सिय सुन्दरता बरनि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई ।।
एहि बिधि सीय मण्डपहिं आई। प्रमुदित साँति पढ़हिं मुनिराई।

पद ६६

सिय मुखचन्द छबि छाई चहुँओर हे।
प्रेम सिंधु अंगना में उठत हिलोर हे ।।
बिबुध बिबुधतिय देखि भेलि भोर हे।
मिथिला के बासी सब आनन्द विभोर हे ।।
जदपि मदन सन अवध किशोर हे।
तदपि किशोरी मुख निरखि चकोर हे ।।
कहथि सनेहलता दुहुँ करजोर हे।
आबू सिया हिया बिच हमर निहोर हे ।।
तेहि अवसर करविधि व्यवहारू।दुहुँ कुलगुरु सब कीन्ह अचारू।

अठौङ्गर पद ६७

अनका कहल किय अयला महल चारू लालन के पूछियौन हे।
बान्हू सखी कसि बन्धन प्रबल कसि लालन के बह्निनयौन हे।।
मिथिला में घूमि घूमि टेढ़ी देखौलनि आइये घुसरतैन्ह।
शेखी सकल कसि लालन के बन्हियौन हे ।।
चौदह भुवन जे अनका बन्है छथि बूझथू कतेक मैथिलानीमेंबल।
बान्हि तखन दिऔन ऊखर मुसरवा आठ चोट गनि कूटथि ।।
सम्हलि आइ धनमाँ कुटबियौन है ।। स्नेहलता किय चित
चोरौलनि भोगथु अपने चितचोरी के फल ।।

पद ६८

चितचोरवा आजु बन्हौलनिए, सब्र शान गुमान गमौलनि ए।
ई चितचोरवा के सिरमनि मौरवा,छोरवा छवि छहरौलनि ए

ई चितचोरवा के चोखी दृग कोरवा,पास करेजवा के कैलनि ए
ई चितचोरवाके लाली लाली ठोरवा,मनमोरवाके भरमौलनिए
चोरवाके आठोअंग बान्हू कसि डोरवा,उधम अथोरवा मचौलनिए
सोनेके ऊखरवा मणिनके मुसरवा,आठे चोटे चउरवा बनौलनिए
सेहेरे चउरवा बन्हाय शुभ करवा, सियाप्यारी बरवा कहौलनिए
चोरवा के भाग्य पर मोद बलिहरवा,शुभ अठौङ्गरवा गौलनिए

दुलहिन पद ६९

जखने सिया के पग छुअल नउनियाँ हे जै जै कहु सिया के, लछमी विराजे हजमा द्वार ।। एक दुई तीनि चारि नव नख छीले हे जय० नवमणि से भरल भण्डार । अन्तिम सु नख छीलि सिया मुख ताके हे जय०, मनि घर सोने के देवार ।। बहुरि सुनयना दिसि निरखे नउनियाँ हे जय०, देल दसलखवा गरके हार ।। मुदित सनेह भरि घर गेल नउनियाँ हे जय०, दुअरे पर झूलै गज हजार ।।

दुलहा का नहछू पद ७०

हे यो पाहुन कृपा कएक चरण पंकज कनेक दीय ।
ललित नख छीलि दुर्लभ लाभशुभ लोचन के हम लीय ।।
हमर महतीनि के कन्या परम धन्या सिया भेली ।
जनक परसाद सँ अपनहुं जुड़ा रहलौं सबहिं जीय ।।
धनुष के टूक कैलौं बात से कछु मन में जनि राखी ।
अनायासहिं ऐली उठबैत बालहिपन सँ श्रीसिय ।।

नृपति छथि गोर अपने श्याम से चरचा शहर भरि में ।
कहै छथि सब कहू कोना कहैत सकुचाइत अछि जीय ।।
नहछु के नेग में सरकार एतबै दिय दयालु होय ।
नाऊ संग में बसथि शान्ती वो हम भरि मोद संग पीय ।।

पद ७१

चरण सरोंज धरि मचले नउनियाँ सुनु हे राघोजी, दिय किछु नहछू कराइ ।। हमरा नै चाही किछु साड़ी चूड़ी आँगी सु०, नहिं चाही कंचन बिदाई ।। शृङ्गी संगे शान्ता सुख बहुत उठौलनि सु०, चाही आब नउवा से सगाइ ।। बूढ़ दशरथजी के तीन पटरानी सु०, हजमा के एकौ न उपाय ।। माँगथि सनेहलता चतुर नउनियाँ सु०, मन में बिचारू चारू भाइ ।।

पद ७२

नउनियाँ के हाथे कनक नहरनी बदन निरेखे दुलहा राम के ।
काहे दुई दुलहा साँवर दुई दुलहा गोर हे ।।
नोह काटु नोह काटु नाउनि अंगुरी जनि काटु हे ।
काहे तोर दुलहा साँवर तूँ काहे गोर हे ।।

देव पूँजा पद ७३

छं०–आचारु करि गुरु गौरि गनपति मुदित विप्र पुजावहीं ।
सुर प्रगटि पूजा लेहि देहि असीस अति सुख पावहीं ।।
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मनमहुँ चहैं ।
भरे कनक कोपर कलस सो सब लिएहिं परिचारक रहैं ।।
कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर कियो ।

एहि भाँति देव पुजाइ सीतहिं सुभग सिंहासन दियो ।।
सियराम अवलोकनि परसपर प्रेम काहू न लखि परै ।
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै ।।
दो०-होम समय तनु धरि अनल अति हित आहुति लेहिं ।
विप्र वेष धरि वेद सब कहि विवाह विधि देहिं ।।

श्रीदुलहा का चरण प्रक्षालन पद ७४

जनक पाटमहिषी जग जानी ।सीय मातु किमि जाइ बखानी।।
सुजसु सुकृत सुख सुन्दरताई।सब समेटि विधि रची बनाई ।।
समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाई।सुनत सुआसिनि सादर ल्याई।
जनक बामदिसि सोह सुनयना।हिमगिरि संग बनी जनु मयना।
कनक कलस मनि कोपर रूरे। सुचि सुगंध मंगल जल पूरे ।।
निजकर मुदित राँय अरु रानी। धरे राम के आगे आनी ।।
पढ़हिं वेद मुनि मंगलबानी । गगनसुमन झरि अवसरुजानी ।।
बर बिलोकि दंपति अनुरागे । पाय पुनीत पखारन लागे ।।
लागे पखारन पाँय पंकज प्रेम तन पुलकावली ।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुँदिसि चली।।
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विराजहीं ।
जे सकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलिमल भाजहीं ।।
जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातकमई ।
मकरंद जिन्ह को संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई ।।
करि मधुप मुनि मन जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं ।

ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं ।।
वर कुँवरि करतल जोरि शाखोच्चार दोउ कुलगुरु करैं ।

हिन्दी भाषा में शाखोच्चर पद ७५

गुरु पद पदुम पराग बंदि गणनाथ मनावौं ।
शेष शारदा बंदि शंभु पद शीश नवावौं ।।
दिव्य सच्चिदानन्द राम जेहि कुल महँ प्रगटेउ ।
नव दूलह वर वेष धारि एहि मंडप हुलसेउ ।।
बंश बखान सुजानबृन्द सन आज सुनावौं ।
सियदूलह की कृपाकोर मति निर्मल पावौं ।।
प्रथम विष्णु के नाभि कंज प्रगटेउ चतुरानन ।
तिन ते भये मरीचि ताहि सुत कश्यप तप धन ।।
विवस्वान महराज ताहि सुत मनु भये सुन्दर ।
श्रीइक्ष्वाकु प्रसिद्ध ताहि सुत भये तदनन्तर ।।
श्री विकुक्षि ते बाण ताहि अनरण्य महाबल ।
श्री पृथु पुत्र त्रिशंकु ताहि सुत धुन्धुमार बल ।।
युवनाश्वात्मज मान्धाता सुत सन्धि विमल यश ।
श्री ध्रुवसन्धि भरत सुत असित सगर असमंजस ।।
अंशुमान सुत श्री दिलीप सुत भए भगीरथ ।
श्रीककुत्स्थ सुत श्रीरघुसुत कल्माषपाद वर ।।
श्रीशंखण के भये सुदर्शन अग्निवर्ण तेहि ।
श्रीघ्रग के मरु भये प्रशुश्रुक अम्बरीष जेहि ।।

श्रीमत् नहुष ययाति ताहि नाभाग समुज्वल।
श्रीअज के भये महाभाग दशरथ कुल कुण्डल ।।
तिनके सुख धाम अभिराम लोक लोचन के,
शंभु हिये मानस मराल गुन खान हैं।
सच्चिदानन्दघन शीलनिधि कोमल चित,
प्रेमी बश प्यारे उदार असमान हैं ।।
व्याह साज साजे मध्य मण्डप विराजे,
काम देखि जाको लाजे साजे भौंह के कमान हैं।
श्रीराम भरत, लषन, शत्रुघ्नलाल,
सुख के देवैया चारों नौशे जन प्रान हैं ।।

तस्य पुनः सुठिमाधुर्यमूर्ति सौम्य श्रीरामचन्द्रः, राशिनाम हिरण्यनाभ इति। सूर्यवंशावतंस सच्चिदानन्द घन परात्पर-पूर्णब्रह्मपरेश समस्तलोक लोचनाभिराम सुखधाम परमोदार परमब्रह्म परमात्मा ।।

स्वस्ति श्रीमत्सकल जगदघध्वंसन परमोदार विनोदविचार सदाचार सच्छास्त्राध्ययन विद्वज्जनगोष्ठीप्रकाश वशिष्ठगोत्र वाशिष्ठैकप्रबर श्रीमन्नाभागवर्मणःप्रपौत्रः१, श्रीमदजवर्मणः पौत्रः २, श्रीमद्दशरथवर्मणः पुत्रः ३, प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये। स्वस्ति सुवासोभूषयोर्वरकन्ययोर्मङ्गलमास्ताम्। इति वरपक्षे वारत्रयं पठेत्।

अथ कन्या पक्षे पद ७६

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जयति जनकजायाः पादपद्मं मनोज्ञं

हरिहर विधिवंद्यं साधकानां सुसेव्यम् ।

नखर निकरकान्तं मुद्रिका नूपुराद्यैः

वर मुनि हृदि मध्ये योगयोगीश भाव्यम् ।।

हिन्दी भाषा पद ७७

श्रीगुरु मूरति हृदय धारि गणपति शिर नावौं ।
गिरिजा शंभु प्रसाद पाइ निमिकुल गुण गावौं ।।
जेहि कुल महँ श्रीपराशक्ति मिथिलेशललीजू ।
प्रगटी करुणाधाम भगत हित कमलकली जू ।।
निमि सुत श्रीमिथिराज ताहि सुत प्रथम जनक जू ।
उदावसु महाराज नन्दिवर्धन सुकेतु जू ।।
देवरात सुत भये बृहद्रथ महावीर पुनि ।
श्रीसुधृति सुत धृष्टकेतु हर्यश्व तासु सुनि ।।
श्रीमरु पुत्र प्रतीन्धक तेहि सुत भये कीर्तिरथ ।
देवमीढ महराज बिबुध सुत भये महीध्रक ।।
कीर्तिरात सुत भये महारोमा शुभ यशध्वज ।
स्वर्णरोम सुत ह्रस्वरोम के भए सीरध्वज ।।

ताहि की लड़ैती सुकुमारी शोभा शील खानि,

जाकी मुखचन्द्र देखि चन्द्रहुँ लजात हैं ।

रूप की उजारी देखि दामिनीहू फीकी परें,

भूषण अनेक अनमोल सोहैं गात हैं ।।

उमा रमा शारदा न उपमा में आवें नेकु,
रति मत कोटिहुँ की कहै कौन बात हैं ।
जानकी माण्डवी उर्मिला श्रुतिकीरति जू,
चारों दुलहिन आज अतिहि सुहात हैं ।।

तस्य पुत्री सुजवसुकुमारांकुरजिता सौम्या श्रीसीता । राशिनाम हेमलतिका । निमिकुल चूड़ामणि सुनयना । प्रिय माधुर्य मिश्रितैश्वर्यालंकारालंकृता निजपति परिचर्या-विलासिनी जगदीशिनी शर्वरीशिनी परमंपरमेश्वरी ।। स्वस्ति श्रीमत्सदाचाराचरण परिलब्ध गरिष्ठादि मुनिगण जेगीयमान यशश्शरच्चन्द्रकरधवलीकृत जगत्त्रयस्य गौतम गोत्रस्यगौतमाङ्गिरसाप्यायेतित्रिप्रवरस्यश्रीमत्स्वर्णरोमवर्मण: प्रपौत्रीं१, श्रीमत् ह्रस्वरोमवर्मण: पौत्रीं २, श्रीमत शीरध्वज-वर्मण:पुत्रीं३, प्रयतपाणि: शरणं प्रपद्ये । स्वस्ति सुवासोभूष-योर्वर कन्ययोर्मङ्गलमास्ताम् इति कन्यापक्षे वारत्रयं पठेत् ।

कन्या दान पद ७८

भयो पानिगहन विलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनंद भरें ।
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलक तन हुलस्यो हियो ।
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषन कियो ।
हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहिं हरिहिं श्री सागर दई ।
तिमि जनक रामहिं सिय समरपी विस्व कल कीरति नई ।
क्यों करें विनय विदेह कियो विदेह मूरति सांँवरी ।

करि होम विधिवत गाँठि जोरी होन लागी भाँवरी ।।
दो०--जय धुनि बंदी वेद धुनि मंगल गान निसान ।
सुनि हरषहिं बरषहिं ब्रिबुध सुरतरु सुमन सुजान ।।

पद ७९

धनि धनि सुनयना जी के अंगनमां दुलहिन दुलहनमां । मिथिला के मान सरोवर मण्डप अति पावन सुन्दर, ताहि बिच हंसिन ओ हंसनमा ।। एक दिसि मौरिया लर बाढ़े एक दिसि घूँघट पट काढ़े, तरे तर नयना के चितवनमां ।। दुनु के सजीवन मूरी भेल छथि सियाजी के चूरी, सरसिज पर सरसिज के सुमनमां ।। फाटल विदेहक छतिया पागल सनेहक गतिया, कौने विधि गावें पानिगहनमां ।।

पद ८०

जँघिया चढ़ाय बाबा बैसला मंडप पर बाबा करून धीयादान हे।
वर करकंज तरलली कर ऊपर ताही में सोहत फूल पान हे ।।
गुरु बशिष्ठजी मंत्र उचारथि मंत्र पढ़त श्रीराम हे ।
सब सखियन मिलि मंगल गावै फुल बरसत देव बहु बार हे ।।
सुसुकि सुसुकि रोवै मातु हे सुनयना अब बेटी भेल मोर विरान हे।
जाही बेटी लागि हम नटुवा नचौलौं सेहो बेटी भेल मोरविरानहे।
चुपे रहु चुपे रहु मातु हे सुनयना इहे थिक जग व्यवहार हे।।

गठबन्धन पद ८१

त्रिभुवनपति रामचन्द्र वर सखि मन रंजन हे ।
ललना हे दुलहिन सिया सुकुमारि पड़ल गठबन्धन हे ।।

प्रेम फाँस थिक बन्धन आमक कंगन हे।
ललना हे कनकबेलि सिया ताग सुमाल रघुनन्दन हे ॥
बर दुलहिन एक संग बैसल सुभ आसन हे।
ललना हे सुरगन बरसत फूल बजत नभ बाजन हे ॥
लतिका सनेह सोहागिन गावति मंगल हे।
ललना हे युगे युगे जीवें चारु दम्पति मिथिला सुमंगल हे।

भाँवरी पद ८२

कुँअर कुँअरि कल भाँवरि देहीं। नयन लाभ सब सादर लेहीं।
जाइ न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी
राम सीय सुँदर प्रतिछाहीं। जगमगात मनि खंभन माहीं ॥
मनहुँ मदनरति धरि बहु रूपा। देखत राम विआहू अनूपा ॥
दरस लालसा सकुच न थोरी। प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
भए मगन सब देखि निहारे। जनक समान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरी। नेग सहित सब रीति निवेरी।
दुलहिन आगे वार त्रय, चारि बार नृपचन्द।
चौथे में गठबन्ध करि, लूटैं अलि आनन्द ॥

पद ८३

चारों दुलहा देहिं भामरिया ए, संग सोहति दुलही नागरिया ए। श्याम गौर गौर श्यामा चारो जोड़ा जोड़िया, हरे हरे होत चहुँओरिया ए ॥ शिरनि पै सोहै मणिन मौर मौरिया, दामिनि की छवि छीनै छोरिया ए ॥ रतनारी कजरारी अजब अँखरिया, लखितहिं करे बेखबरिया ए ॥

अंचल चदरिया में परी हैं गठरिया, बाँधे हैं कि बूटी बसकरिया ए।। नवरंग मणिन की सुपली सोहरिया, लावा छिरियावैं भरि भरिया ए ।। उमगि उमगि गावैं अलिगन गरिया सुख सरसत बेसुमरिया ए ।। जयति जयति जय जय होत सोरिया, सुर करैं सुमन की झरिया ए ।। परै मनि खम्भन्हि में दम्पति छहरिया, जागै जोति जगर मगरिया ए ।। मानो रतिपति जानि पितु महतरिया, प्रगटि दुरत बेरि बेरिया ए ।। फूली न समाति लखि मोदिया किंकरिया, लली लाल लखनि लजोरिया ए ।।

पद ८४

ई छैला अवध के अन्हरिया, हमार पिया पूनम अँजोर ।।
सिय छवि छाँह छुअत वसनन्हि छनि, हरियर होत सँवरिया
घूँघट ओट छटा छिन निरखत, बिसरत देन भँवरिया ।।
सहमि सकुचिझुकि उझकि चकित चलि,चाहत छबि दृगभरिया
मनि खम्भन्ह प्रतिबिम्ब कबहुँ लखि, टारत नाहिं नजरिया।
भाँवर देत जोरि अनुपम छवि, लखि करील बलिहरिया ।।

सेन्दुर दान

राम सीय सिर सेन्दुर देही । सोभा कहि न जात विधि केही।
अरुनपराग जलज भरिनीके । ससिहिं भूषअहि लोभ अमीके।

पद ८५

कौने नगर के सिन्दुरिया सिन्दुर बेचे आयल हे।
आगे माइ कौने नगरके कुमारी धीया सिन्दुर बेसाहल हे

अवध नगर के सिन्दुरिया सिन्दुर वेचे आयल हे।
मिथिला नगर के कुमारी धीया सिन्दुर बेसाहल हे।।
कौने रंग रसिया जे बरवा से सिन्दुर चढ़ावल हे।
कौने धीया वारी सुकुमारी से सिन्दुर संवारल हे।।
श्याम रंग रसिया जे बरवा से चिन्दुर चढ़ावल हे।
सिया धीया वारी सुकुमारी से सिन्दुर संवारल हे।।
जय जय होत चहुँओर सुमन बरसावल हे।
कदमलता पद गावल सुनि सुख पावल हे।।

पद ८६

प्रिय पाहुन सिन्दुर दान करूँ।
ई अवसर नहिं लाज करक थिक एखनन किछु हठ मान करू
लिय सिन्दुर कर कमल मुदित चित हमर कथा किछु कान धरू
लग्न मुहूर्त्त सुमंगल एखन अब न बिलम्ब महान करू।।
गाइनिगन अहूँ तानि मधुर धुनि शुभ शुभ मंगल गान करू।
दामोदर विधि आजु मुदित चित वर कन्या कल्यान करू।।

विवाह सिन्दुर दान पद ८७

कैसे श्याम ये सुघर वर सिन्दुर उठा रहे हैं।
जनु इष्ट देव सीता सिर पर चढ़ा रहे हैं।।
चिर काल केश कर के संयोग हो रहे हैं।
तेहिते सिया के कुन्तल पिय करसे मिल रहे हैं।
सखि यूथ में सुदूलह सिन्दुर लगा रहे हैं।
जनु मानिनी सिया को प्यारे मना रहे हैं।।

'रूपलता' समन्त्रों से कर चला रहे हैं।
मोहन वशीकरन ये जनु सर चला रहे हैं।।

चुमावन पद ८८

चुमावत हो ललना धीरे धीरे।
कंचन थार सम्हार सुआरति घुमावत हो ललना धीरे धीरे।
मंगल गाइ सुनयनाजी आई चुमावत हो ललना धीरे धीरे।।
सरहोज आई महल से दौरी बजावत हो बिछिया धीरे धीरे।
प्रेम सहित सेकि सेकि कपोलन रिझावत हो दुलहा धीरे धीरे

मण्डप की झांकी पद ८९

बहुरि बसिष्ठ दीन्हि अनुसासन। बर दुलहिनि बैठे एक आसन
छ०-बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दसरथ भये।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नए।।
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबहीं कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यह मंगल महा।।
तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि कै।।
कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभा मई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहिं दई।।
जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्हीं ब्याहि लखनहिं सकल विधि सनमानि कै।।
जेहि नाम श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी।।

अनुरूप वर दुलहिन परस्पर लखि सकुच हियँ हरषहीं ।
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुगरन वरषहीं ।।
सुन्दरीं सुन्दर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं ।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं ।।
दो०-मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि ।
जनु पाए महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि ।।

पद ६०

शोभित सीताराम कनक मण्डप तरे ।
सिर सोने के मौर मंजु मुक्ता गरे ।।
परसत अमल कपोल सुमुक्ता मौर के ।
राजिवलोचन लोल कमल मानो भोर के ।
सुरंग चूनरी के निकट पीत पट छुई रह्यो ।
मनहुँ अरुन घन मध्य चपलता चुइ रह्यो ।।
सिय भूषन प्रतिबिंब राम छबि उर धरे ।
मनहुँ जमुन जल मध्य दिव्य दीपक बरे ।।
राम भुजा के निकट सीय भुजा यों लसे ।
मरकत मनि कर खम्भ मनहुँ कंचन कसे ।।
राम भये घनश्याम सिया भइ दामिनी ।
मुनि भये चन्द चकोर चकित भइ भामिनी ।
राम भये तन गौर सिया भइ साँवरी ।
सारद सी बुधिवन्त बधू भइ बावरी ।।

पुष्पन बरसत मेघ मेदिनी थर हरे ।
होत जनकपुर व्याह राम भाँवरि फिरे ।।
सुर नर मुनि आनन्द सुमन वरषा करे ।
सिव ब्रह्मादिक देव मुदित जय जय करे ।।
राम सिया को ध्यान सदा संकर धरे ।
ब्रह्मा रूप निहार इन्द्र पूजा करे ।।
यह छवि युगलकिशोर सु मुनिजन ध्यावहीं।
लखि लखि विमल विनोद वेद जस गावहीं ।
जो यह मंगल गावहिं गाय सुनावहीं ।
परसि सिया पद पद्म परम पद पावहीं ।।
तुलसी सीताराम सदा उर आनिये ।
राम भजन बिन जन्म वृथा कर मानिये ।।

पद ९१

नारि सुभग मण्डप तर मंगल गावहीं ।
सुनि सुनि सीताराम बहुत सुख पावहीं ।।
काल करम गति छेकि इहै छवि नित रहौ।
निरखि निरखि सब लोग महासुख के लहौ।।
नाम केशरिया पट सजे सिया लाल को ।
दुऔ प्रीति के रंग रंगे यहि चाल को ।।
राम बसत नित सिय में राम में सिय हैं ।
दोउन के पट कहत दोऊ एक जोय हैं ।।

प्रथम चऊथ औ बीच के अक्षर जोरि के ।
ए दोउ तारक सीम छनत रस घोरि कै ।।
मिथिला जाउ अवध कि अवध इहाँ आवहिं ।
दिन विछोह कर हम कहँ विधि न देखावहिं ।।
सरबस राज अरपि नृप राखहिं राम के ।
नाहिं त होइहैं विदेह जथारथ नाम के ।।
नित विहार सियाराम को दोऊ ठाऊँ में ।
देव करिहिं एहि भाँति कुशल दोऊ गाऊँ में ।।

पद ६२

चारों दुलह चारों दुलहिन बैठे मण्डप तर हे ।
जगमग जगमग जोति निरेखो नयन भर हे ।।
मौरिया की झालर झलकत मुख छवि छलकत हे ।
सकुचि परस्पर चितवत हुलसत पुलकत हे ।।
बड़का दूलह घनश्याम दुलहि जनु दामिनि हे ।
मझिला दुलह ज्यों तमाल कनकलता कामिनि हे ।
संझिला दुलह तन गौर सु मनहुँ निशाकर हे ।
दुलहिन सांवरि रंग अधिक सुषमा भर हे ।।
अति कोमल लघु दुलह दुलहि नहि जाति कहिहे ।
कनक कदलि ढिग श्याम बेलि जनु फवि रहि हे ।।
नील पीत रंग हिलि मिलि औरे रंग सरसत हे ।
सकल बराति सराति हरित रंग दरसत हे ।।

धन्य भाग रघुनन्दन पायउ सिय तिय हे ।
धन्य किशोरी के भाग्य भयउ रघुबर पिय हे ।।
हम सब धन्य धन्यतर बर सुख लूटब हे ।
प्राननाथ के साथ नात भल जूटल हे ।।
कोउ छबि लखि तृण तोरति राई लोन वारति हे ।
कोउ सखि दम्पति मूरति हिय बीच धारति हे ।।
निरखि सुमन सुर बरसत हरषत तरसत हे ।
मोदलता तन मन वारि दम्पति पद परसत हे ।।

पद ६३

श्रीकिशोरीजी के अंगना विलोकू बहिना ।
छबि शशि मुख राम छबिनिधि जानकी, रचल विधना, कने ओम्हरो निहारू तीनू जोरी तहिना ।। माण्डवी चकोरी संग भरत चकोरवा विराजे दहिना, श्रुतिकीर्ति संग शत्रुहन शोभे ओहिना ।। बबुआ लखन संग शोभे उरमिला दाइ उपमा बिना, सखि बुझू जेना अंगूठी में शोभे नगीना । कहथि सनेहलता मिथिला में राखू तिनसौ साठियो दिना, एहे पंचमी के तिथि अगहन महीना ।

पद ६४

आई विधना के कतेक गुनमां गाबू हे सखी ।
जेहने अपन किशोरी, शोभा सिन्धु सिय गोरी, तेहने लागि भल जोरी, नयन जुड़ाबू हे सखी ।। जेहने माण्डवी हँसोरी सिय मुखचन्द्र की चकोरी, तेहने भरत विभोरी देखि सुख

पाबू हे सखी जेहने धीया उरमिला तेहने श्रुतिकीर्ति सुशीला तेहने लखन शत्रुहन हिय में बसाबू हे सखी ।। देखि झाँकी सखी सनेह सुधि बुधि भेलि बिदेह, सब्र मिलि राखू नित नेह जनि बिसराबू हे सखी ।

पद ९५

रतन जड़ित मण्डपतर राजत दुलहा श्याम सलोना री ।
सिर सुन्दर सोबरनि सेहरा श्रवननि झलक तरौना री ।।
श्याम दरन पर अलक झलकत मानो नागिनि के छौंना री ।
वामअंग सोभित सिय सुन्दरि अंग-अंग छवि मन हरना री ।
प्रिया सखी ऐसी मृदुजोरी अनत नहीं कहीं होना री ।।

पद ९६

दूलह राम सिय दुलही री ।
घनदामिनि वर वरन हरन मन सुन्दरता नखशिख निबही री
ब्याह विभूषन वसन विभूषित सखि अवली लखिठगिसी रहीरी
जीवन जनम लाहु लोचन फल है इतनोइ लह्यौ आजु सही री
सुषमा सुरभि सिंगार छीर दुहि मयन अमियमय कियोहैदहीरी
मथि माखन सियराम सँवारे सकल भुवन छवि मनहुँ मही री।
तुलसिदास जोरी देखत सुख सोभा अतुल न जाति कही री ।
रूप रासि बिरची विरंची मनो सिला लवनिरति काम लही री

पद ९७

रामचन्द्र दुलहा सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे ।
ना जानी कौशिल्या माइके कोखे गुण कि रामचन्द्ररूप गुण हे।

माथे मणि मौरिया सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी मलिनियाँ के हाथे गुण की रामचन्द्र माथे गुण हे।।
चन्दन दुलहा के सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी पंडितजी के हाथे गुण की रामचन्द्रभाल गुण हे।।
कंठा दुलहा के सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी सोनरवा के गढ़े गुण की रामचन्द्र कंठ गुण हे।।
अंग में के जोड़वा सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी दरजिया के बनवे गुण की रामचन्द्र अङ्ग गुण हे।।
चरण महावर सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी हजमा के लगावे गुण की रामचन्द्र चरणे गुण हे।।

पद ९८

मण्डप बिच जोरी चमकि रही।।
मरकतमनि संग जालरूप छवि घन बिच दामिनि दमकि रही।
सुधा सार रस प्रेम सिन्धु लखु मिथिला छवि छुइ छलकि रही।।
तरु तमाल लहि कनकलता जनु लिपटि रही तउ ललकि रही।
चिरजीवैं यह अविचल जोरी योगेश्वर अभिलाष यही।।

आशीर्वाद पद ९९

दुलह दुलही की छबि बाँकी मुबारक हो मुबारक हो।
अनुपम सखि जुगल झाँकी मुबारक हो मुबारक हो।।
लसै शिर मौर मौरी ब्याह भूषण औ वसन दौउ तन।
न उपमा मिलि सकै जाकी मुबारक हो मुबारक हो।।
अमित रतिनाथ हैं लज्जित निरखि सियवर सलोने की।

त्यौं रति लखि छबि जनकज़ाकी मुबारक हो मुबारक हो ॥
जिन्हें लखि जोगिजन तरसैं विराजैं मध्य मण्डप पर।
अहे बड़ भाग मिथिला के मुबारक हो मुबारक हो ॥
मनोहर जुग्म शशि को त्यागि पल देखैं चकोरी सी।
ये आँखै नेहलतिका की मुबारक हो मुबारक हो ॥

पद १००

ये जोरी चारु चन्दा की जिये जुग जुग मुबारक हो।
लसैं सिर मणिन के सेहरा तिलक युत खौर हो गहरा ॥
रसीले नैन में कजरा जिये जुग जुग मुबारक हो।
पीतपट चूनरी छोरी बँधी हो गाँठि रस बोरी ॥
सुछबि निधि श्याम ओ गोरी जिये जुग जुग मुबारक हो।
पिया कुण्डल अलक प्यारी हो अरुझी हो छटा न्यारी ॥
सखी सब जाहिं बलिहारी जिये जुग जुग मुबारक हो ॥

पद १०१

नव नव राजत छिन छिन अनूप छटा,
सजल जलद वरन रूप मदनहूँ लजावै री।
बड़े बड़े नैन अनियारे कजरारे प्यारे,
लाल लाल डोरे तामें अधिक सुहावै री ॥
मरकत धनु कुटिल भौंह नासातिल सुमन चारु,
मदन मुकुर से कपोल कुण्डल झलकावै री।
तापै छुटी अलक सघन शशि बिच लख मीन मानो,
धरत धसे अहि अनेक परस को न पावै री।

जैसोई स्वरूप वैसी सुघरता सुजानताई,

माई री सिया को वर मोको अति भावै री ।

रसिकअली यह अनूप जोरी जग अचल राज,

वैभव विलास नित नयो विधि बढ़ावै री ।।

आरती पद १०२

रंगीली आरती करु नीकी । नवल वर नौशय दुलहिनिजी की ।

पगतल ललित संयुक्त महावर, रंजित नख अवली की ।।

वसन वसन्ती सुकटि लसन्ती सारी मोल घनी की ।

मुख सुछवि की सींव बनी की मुसकनि वृष्टि अमी की ।।

मौर मौरी की छहर छोरी की दामिनी दुति करैं फीकी ।

मोदअली की सरबस ही की झाँकी सिया सिय पी की ।।

द्वार छेकाई पद १०३

द्वार की छेकाई नेग लूंगी मन भाईहाँ तब जाने दूंगी कोहवरसदन सुहाई ।। सकुच विहाय दीजे दीनो है जो माई हाँ तब जाने दूंगी ।। चाहे सोई मानिये जो कहूँ समुझाई हाँ तब जाने दूंगी ।

कीजै मेरे भैया से निज बहिनी की सगाई हाँ तब जाने दूंगी ।

मोद नहीं तो लीजै सिया शरणाई हाँ तब जाने दूंगी ।।

पद १०४

छोड़ब नाहीं दुआरी हे सुनिये रघुनन्दन ।

जबहीं कोहवर चले रघुनन्दन सखियन छेकल दुआरी ।

नेग दिये बिना जो पग धरिहो दूंगी मैं गारी हजारी ।।

जो नहिं राखत साथ पदारथ बेचो बहिनी महतारी ।

सकुचत जन हरिनाथ न बोलत बिहँसत अवध बिहारी ।।

सरकार का बचन पद १०५

विश्वामित्र मुनि ज्ञानी पिताजी से माँगी आनी,
संग में न हम कछु लायो हे सहेलिया।
दिल एक साथ लायो प्यारी तू लियो चुराय,
तिरछी नजर को चलाय हे सहेलिया॥
देर होत जाने देहु बात मोरी मानि लेहु,
खड़े खड़े चरण पिराय हे सहेलिया।
मन मोरा मोहि लियो प्यारी सखी बरजोरी,
श्रीनिधि लियो है लुभाय हे सहेलिया॥

कोहबर की झांकी पद १०६

स्याम सरीर सुभायँ सुहावन। सोभा कोटि मनोज लजावन।
जावक जुत पद कमल सुहाए। मुनिमन मधुप रहत जिन्ह छाए॥
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरति बाल रबि दामिनि जोती।
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर।बाहु विसाल बिभूषन सुन्दर॥
पीत जनेउ महाछबि देई। कर मुद्रिका चोरि चितु लेई॥
सोहत ब्याह साज सब साजे। उर आयत उरभूषन राजे॥
पियर उपरना काखासोती। दुहुँ आँचरन्हि लगे मनिमोती॥
नयन कमल कल कुँडल काना। बदन सकल सौंदर्ज निधाना॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक रुचिरता निवासा॥
सोहत मौर मनोहर माथे। मंगलमय मुकुता मनि गाथे॥
छ०-गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुरनारि सुर सुंदरी बरहि बिलोकि सब तिन तोरहीं॥

मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं ।
सुर सुमन बरसहिं सूत मागध बंदि सुजस सुनावहीं ।।१
कोहबरहिं आने कुअँर कुअँरि सुआसिनिन्ह सुख पाइक ।
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करन मगल गाइ कै ।।
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सारद कहैं ।
रनिवास हास विलास रस बस जन्म को फल सब लहैं ।।२

कुल देवता पद १०७

यह आपकी कुलदेवता इन्हें सादर सीस नवैये ।
करजोरि सुविनय सुनइये, करुणा पर बलि बलि जइये, अब नेकु न बिलम्ब लगैये ।। शुभ आसन दै बैंठये,पग धो जलशीश चढ़ैये, मधु मेवा भोग लगैये ।। इत भेजी हैं आपकी मैये, आय देखन चारो भैये, अलि मोद सुभाग्य मनईये, इन्हें० ।।

पद १०८

जुआ खेलो कुमर वर चार, बाजी लगाई के ।
जो तुम जीतो अवध मैं चलिहौं,लोक लाज कुल छाड़ि सिया संग उमगाइ के।। जो हारो दीजिए मेरे भैया को, करि मंगल उपचार बहिनि निज सगाई के ।। विहँसि विहँसि कौड़ी कर भाँजैं, निज निज दाव सँभार, सुख रस सरसाइ के ।। खेलत मोद अजित वर हारे सखियन दीनी हहार, ताली बजाइ के ।।

चौपर पद १०९

जुआ खेलो कुवर वर चार बाजी लगाइ कै ।
हे चारो दुलहे सम्हलि कौड़ी खेलो ।

बाजी की बाटे परथम तय, करलो पीछे कीजो झमेलो ।
जौहरि मिथिलानी कदाचित, दासी बना सँग लेलो ।।
अगर आप हारे रघुनन्दन, मिथिला में रहु केलो ।
विहंसि विहंसी कौड़ी फेकन लागे, जीते अली अलवेलो ।।
स्नेहलता कर पकड़ि ललन के, बोली की बाजी देलो ।।

बाती मिलावन पद ११०

नौशय चारों नवल वर कोहवर राजहिं हे ।
जुरि रही अलिन समाज हास्य रस छाजहिं हे।
सोने को दियरा नगनजरि रेसम बाति हे ।
कनकथार महँ बारि दुई लाई रंग राति हे ।।
लालन यह दोउ दीपक एक संग जोरिये ।
याको अमित प्रभाव न जानिये थोरिये ।।
जौं यह दोनों टेम आप कर जूटिहैं ।
दम्पति चारु सनेह न कबहूँ टूटिहैं ।।
सुनि मुख डारि रूमाल हँस्यो दृग बाकि कै ।
सखियन भयउ निछावर छबि रस छाँकि कै ।।
कोउ कहि बिनु बोले आवत नहिं सकुचाय जू ।
बातिहिं बात मिलावत काहे लजाय जू ।।
लाल कह्यो हँसि भौंरहिं कौन बुलावहीं ।
शोभा करन प्रसून आप चलि आवहीं ।।
दीपकला भल जानहिं मोद सुवाम हैं ।
मनसो मनहिं मिलावन मेरो काम हैं ।।

लहकौरी पद १११

आज न लजाओ गोरी मधुर मिलनवाँ हे।
मीठी मीठी खीर खाओ सजनी सजनवां हे ।।
मधुर मधुर खीर प्रीति के करनवां हे।
धनियाँ खिलाये खाय पिया जीवन धनवां हे ।।
मुसुकि मुसुकि बोले सरहज बचनवां हे।
धनी हाथे खीर खाये, लाज न नयनवां हे ।।
पहिले खिलावो खीर धनी के सजनवां हे।
प्राण प्राण एक आज मधुर जीवनवां हे ।।
हंसि हंसि साली कहे सुनो जी पहुनवां हे।
दोनो एक साथ खाओ तोड़ि कै बंधनवां हे ।।
सखियन गावे गीत प्रीति के करनवां हे।
दुई तन एक प्राण सजनी सजनवां हे ।।

लहकौर पद ११२

दो०-गौरी सिखवति राम कहुँ, माखन मिसरी लेहु।
जबहिं सीय चाखन चहैं, अपने मुख धरि लेहु ।।
कहैं सारदा सिय सों, कुवँरि सजग ह्वै लेहु।
मुख सन्मुख जब कर करैं, तुरत जूठ करि देहु ।।
खीर लेइ रघुनाथ जी, सिय मुख सनमुख कीन।
परम चातुरी लाड़िली, तुरत जूठ कर दीन ।।
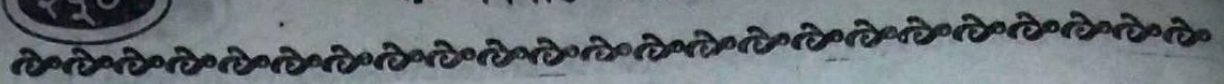
पद ११३

कौशिल्या के लाल सलोने जूठन खायो री ।
अति सुकुमारी कुमारि छबीली रामलखन भरमायो री ।
अवध नगर की नारि चातुरी, ऐसे सुत जिन जायो री ।।
मिथिलापति की कुवँरि लाड़िली, देखि राम ललचायोरी ।
श्रीराम चारु चन्द्रिका सीय छबि,छिटकि चहुँदिसि छायोरी

जेवनार पद ११४

जेमथि जनक घर श्याम सुन्दर बर,
से वर नींक लागइ रे मनहरवा ।
षठरस व्यंजन अलिगन परसति,
सुरति छबि छाकै रे मनहरवा ।। से वर० ।।
सारी सरहोजिया घेरी चहुँ ओरिया,
सरस गारी गावइ रे मनहरवा ।। से वर० ।।
श्रृंगी शान्ति के कथा सूनी के,
से मन मुसुकाई रे मनहरवा ।। से वर० ।।
इहो मन हरवा के धरु हिय हरवा,
'रमन' नित राखइ रे मनहरवा ।। से वर० ।।

कोहबर हास्य पद ११५

श्री कोहबरवा घरवा राजैं बरवा चार गुइयां ।
हँसनि हँसावनि की हो रही बहार गुइयाँ ।।
कमल कली सी चहुँदिसि नव नार गुइयाँ ।
बीच में विराजे अलबेले चारों यार गुइयाँ ।।
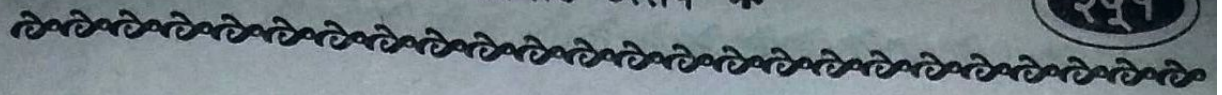
चमर चलावती छबीली छवि वार गुइयाँ।
बिरिया खवावती सुगंध बहु डार गुइयाँ।।
झूमि झूमि झाँकैं सब झाँकी मजेदार गुइयाँ।
हरसत सुख सरसत बेसुमार गुइयाँ।।
बोली सिद्धि प्यारी सुनो अवध व्यवहार गुइयाँ।
होत रघुवंश में पुरुष गर्भधार गुइयाँ।।
रहे 'युवनास्व' एक राजा गुणागार गुइयाँ।
जाय 'मानधाता' सुनि परेउ हहार गुइयाँ।।
'सुदुमन' भये 'इला' कुमरि उदार गुइयाँ।
कुलटा 'पुरुरवा' जनाई करि जार गुइयाँ।।
तीस दिन तिया रहैं पुरुष तीस वार गुइया।
सुनते हँसेउ सब दै दै ठहकार गुइयाँ।।
'सुमति' सयानी एक भई दिमागदार गुइयाँ।
ब्यानी एक बारही में साठि हजार गुइयाँ।।
'शान्ता' सुकुमारी जोग भेटे न भतार गुइयाँ।
तपसी के गर बांधे जानत संसार गुइयाँ।।
अवध की तिया सब अतिहिं खेलार गुइयाँ।
पायस से पैदा किये मोद प्राणधार गुइयाँ।।
सकल छवीली छवि छकि भई न्योछार गुइयाँ।
परानन्द फूली भूली अपनी परार गुइयाँ।।
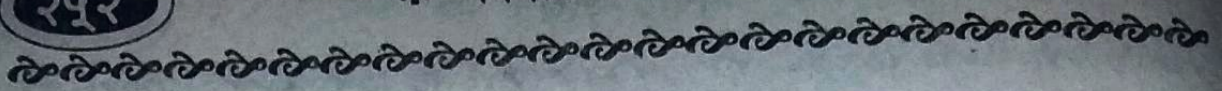
पद ११६

लखि कौतुक घर में नारि हँसि हँसि पूछति हैं रघुबर से।
तुमहिं जगत को सार कहहिं मुनि कहि न सकति हम डर से॥
तुम नहिं पुरुष न नारि कहहिं श्रुति खेलहु खेल मकर से।
सो लखि परत मकर कुण्डल से और किशोर उमर से॥
दशरथ गौर कौशल्या गोरी तुम श्यामल केहि घर से।
दोऊ के हरि ध्यान प्रगट भये अस हमरे अटकर से॥
व्यङ्ग चतुरता गारी सुनि के देखा राम नजर से।
भई कृतारथ देव मनावहिं जनि ए जाहिं नगर से॥

पद ११७

रामलखन सन सुन्दर वर के जनि पढ़ियौन केव गारी हे।
केवल हास विनोदक पुछियौन उचित कथा दुइ चारी हे॥
प्रथम कथा ई पुछियौन सजनी कहता कनेक विचारी हे।
गोरे दशरथ गोरी कौशल्या भरत राम किय कारी हे॥
सुनु सखि एक अपूरब घटना अचरज लागत भारी हे।
खीर खाय बालक जनमौलनि अवधपुरी की नारी हे॥
अकथ कथा की बाजू सजनी रघुकुल के गति न्यारी हे।
साठि हजार पुत्र जनमौलनि सगरक नारि छिनारी हे॥
'स्नेहलता' किछु आब न कहियौन एतवे करथि करारी हे।
हँसी खुशी मिथिला से जयता भेजि देता महतारी हे॥

पद ११८

हिनकर पक्ष आब हम करबैन्ह अहाँ घुसइछियैन्ह हिनका की।

हमर अपन केहनो छथि पाहुन ताइ सँ मतलब अनका का ।।
अपन वस्तु पर अपन खुशी थिक अछि कानून जहाँ ताकी ।
अपन बहिनि के बेचिये देलनि ताइ सँ मतलब अनका की ।।
साठि हजार वियइलथिन पुरखिन किन्तु करइछी निन्दा की ।
दुख सुख जनलनि जे जनमैंलनि ताइ सँ तखन अनका की ।।
गट गट गारि सुनथि सब लालन मगर मरम्मत करता की ।
'स्नेहलता' मुसुकाथि लजायल असल बात में बजता की ।।

कोहवर १८ ११६

कोहवरवा की शोभा अपार है ।
जहाँ खासा नवल दरबार है ।।
मदमाती सखी इठलाती, मुसुकाती हुई बलखाती,
बिच बैठे कुमर वर चार हैं ।। को० ।।
कोउ पानों के बीड़े चबाती, कोउ लालन से आँखें लड़ाती,
करती महफिल में नखड़े हजार हैं ।। को० ।।
कोउ मीठी सी गाली सुनाती, कोउ मीठी दिल्लगी उड़ाती,
तेरे कुल का कवन व्यवहार है ।। को० ।।
कोउ पूछे मुसुकि दय तारी, कहु को थी सगर की नारी,
कैसे ब्यानी वो साठि हजार हैं ।। को० ।।
सुनि शंसय लगे बड़ भारी, तेरी बहिनी बेकहल छिनारी,
कैसे बाबा जी उनके भतार हैं ।। को० ।।
यह कोहवर 'स्नेहलता' गावे, मिथिलानी महा सुख पावे,
हम लालन के लालन हमार हैं ।। को० ।।
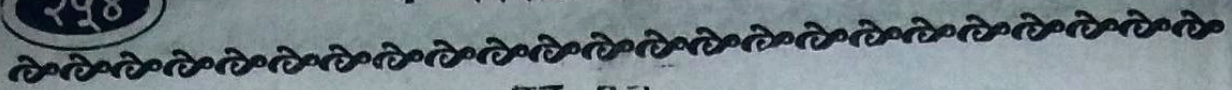
पद १२०

जेहने सलोनी सिया तेहने सलोना यौ दुलरुवा दुलहा, तनि हँसि हेरू हमरी ओर ।।यौ०।। अपना दुलरुवा सिर मौरिया, सँवारब ।। यौ दु० ।। मोतिया लगायब चहुँओर ।। जुलुफ अतरवा भाल केसर की खौरवा ।। यौ दु०।। कजरा लगा-यब दृगकोर ।। धनि धनि प्यारी मोरी धनि मनमोहना ।।यो दु०।। मड़वा वैसायब गाँठि जोर ।। मुख चूमि चूमि दुलहा लेबै बलैया ।।यौ दु०।। तनि बोली बोलू रस बोर ।। दुनू दुलरुवा के हिया में बसायब ।। यौ दु० ।। 'सियाअली' सरबस मोर ।।

पद १२१

मोहि लेलकै सजनी मोरा मनमां, पहुनमां राघो । जुलुमी जुलुफिया कारी, माथे मनि मौरिया न्यारी, लाल-लाल भाल पर चन्दनमाँ ।। अँखियाँ में काजर काली, ओठवा पर पान की लाली, मुसुकैत श्यामल बदनमां । दुपटा चपकन लगनौती पहिरे बिअहुती धोती, पहुँची पर आम के कंगनमां ।। धनि धनि किशोरी मोरी देखलौं 'सनेहिया' जोरी हिया मोरा कोहबर के भवनमां ।। पहुनमां राघो०।।

पद १२२

नयनमां माने नहीं मोरा लालन कनेक मुसुका दे ।
सुन्दर लाल भाल पर चानन, काजर कयल
नयन छवि आनन, मौरिया के लड़ हटवा दे ।।

दाड़िम दसन हँसन बिच टोना, त्रिभुवन
मोहन श्याम सलौना, मुसुकैत नैना उठा दे।
हीरक हार मउर लर मोती, चपकन चारु
बिअहुती धोती, चरन कै महावर देखा दे ।।
'स्नेहलता' लखि रूप मनोहर, राखि लेब
हिय बीच धरोहर, मांगब न हम किछु जादे ।।

पद १२३

हे अवध छयल मनहरन पिया तेरी आँखैं अजब मतवारी है।
भौंहैं कमान दोउ नैन बान पर विष सम कजरा डारी है ।।
चम चम चमके माथे पै मौर चहुँओर छोर छहराय रहे।
झगड़ैं आपस में कुटिल केश अरु निज निज दांव बचाय रहे।।
पर नासामनि है मस्त आज रस पीकर अधर अपारी है।
दाड़ीम दसन मृदु मंन्द हँसन लखि ललकि जिया मोरा भूलि रहे
कुण्डल कपोल पै कर किलोल सुचि हार गले बिच झूलि रहे।
ओ नील बदन पर तिलक बिन्दु चमके जनु घटा सुकारी है ।।
पीत रंग कोरदार बसन चपकन पर चादर डारी है।
पावों में महावर मेंहदी हाथ की लाली अजब निराली है ।।
इस हृदय मध्य में बसो पिया 'विन्ध्येश्वरि' तन मन वारी है।

पद १२४

लामी लामी केशिया तोरी साँवली सुरतिया हाय रे दुलहा,
दुलहा बोलेला मधुरी बोल ।। माथे मणि मौरिया तोरी
जामा जड़तरिया हाय०, अलक हलनियां अनमोल ।। नयना

कजरिया तोरी, छेदेला जिगरवा हाय०, तिरछी तकनियां विष घोल ।। एक मन करे तोरा संगे संगे रहितौं हाय०, एक मन करे डमाडोल ।। 'मोहन' मन हरवा तोरी बड़ी बड़ी अँखियां हाय०, सनमुख चितावे पट खोल ।।

पद १२५

जनक किशोरी मोरी भेलथिन बहिनियां हे मिथिला के नाते, रामजी पहुनमां भेलथिन मोर ।। सिया सुकुमारी छथिन प्राणहूँ के प्यारी हे मिथिला, प्राणधन कौसल किसोर ।। निरखि हृदय के हम मड़वा बनायब हे मिथिला, दुलहा दुलहिनि चितचोर ।। कबहुँ हृदय के हम कोहवर बनायब हे मिथिला, हास रस में होयब विभोर ।। दुलहा दुलहिन संगे जीवन बितायब हे मिथिला, 'रूपलता' लखि दृगकोर ।।

पद १२६

चिर जीवै बनी को सुघर बनरा ।
जामा जरद जरकसी पटुका, मुख मयंक ऊपर सेहरा ।।
पान खात मुसुकात छबीले घायल करत नयन कजरा ।
'मधुपअली' निरखत छवि ऊपर तन मन धन न्योछत सगरा ।।

पद १२७

जीयो जीयो चन्दा चांदनिया रे ।
जीयो जीयो बरस करोरी, जबलौं चांद सूरज की अँजोरी, सुख लूटें मिथिला भामिनिया रे जीयोजीयो मिथिलेशकिशोरी प्रीतम मुख छवि चन्द चकोरी नित नव रसबरसावनियां रे।।

जीयो जीयों मेरे नयनों के तारे, सिया प्यारी के प्राण अधारे, सखियन नयन जुड़ावनियाँ रे ।। जुग जुग जीयो माधुरी जोरी, अचल रहो बड़भाग बढ़ो री, मन भावन मन भावनिया रे ।

आशीर्वाद पद १२८

मंडप बिच जोरी चमकि रही ।

मरकत मणि संग जाल रूप छवि घन बिच दामिनि दमकि रही
सुधा सार रस प्रेम सिन्धु लखु मिथिला छवि छइ छलक रही।।
तरु तमाल लहि कनकलता जनु लिपटि रही तउ ललकि रही।
चिरजीवै यह अविचल जोरी, योगेश्वर अभिलाष यही ।।

पलँग सजाना पद १२९

कंचन महल मनिन केर दियरा कंचन लागल केवार रे ।। बने बाँस के कोहबर ।। गज दंत सेज मखमल के बिछउना रतन के बनी है सिंगार रे ।। बने० ।। तापर सोवत रघुबर दुलहा सीता दुलहिन संग वाम रे ।। बने०।। नील पिताम्बर रतन के भूषण राजत अंग साँवर गोर रे ।। बने० ।। तों मुख फेरि सोवे रघुबर दुलहा दुलहिनि सोवे करिमान रे ।। बने० ।। अमल कपोल मुखपट लेइ पोछत फेरि फेरि हिया में लगाय रे ।। बने० ।। दुलहा दुलहिनि अंग परसि परस्पर हरषि नयन जल छाय रे ।। बने० ।। 'जन हरिनाथ' रघुनाथ सिया जी के आनन्द बरनि न जाय रे ।। बने० ।।

पद १३०

आली लखु कोहवर की सुबहार ॥
दृग अरविन्द नींद बस अतिहीं, होय रहे रतनार ।
आलस बस अब पलक अड़त नहिं करत न मौर संभार ॥
क्यों सकुचात सुघर वर प्यारे, प्यारिहि लेहु निहार ।
करि आरती वारति पुष्पाञ्जलि, मोदअली पट डार ॥

दुलहा आलस पद १३१

लालन बात करत अलसाय ।
झूम झूम को आवत निंदिया, नैन रहे अरुनाय ॥ला०॥
बार बार जमुहाई आवत कमल वदन कुम्हिलाय ॥ला०॥
सम्हलि सम्हलि अँगराई लेत सब, पलक रहे झपलाय ॥ला०
'स्नेहलता' लखि सब अलसाने, कोमल सेज सजाय ॥ला०॥

पद १३२

युगल छवि सुन्दर सेज सोहाय ॥
श्री जनकलली रघुराज सलोने पलक गिरत अलसाय ।
मृदुल रजाई कोमल क्षीर फैन सरसाय ॥
तापर विथुरे अलकै सोहै रही सौन्दर्य बढ़ाय ।
स्नेहलता लुनाई सिय पिय कोहवर घर लहराय ॥

पद १३३

सेज सुख सो गये कोहवर घर में ।
कोहवर महल भिन्न प्रति दुलहा अलियां विलग सुघर में ॥
हास विलास सुधारस भीजे नहि उपमा पटतर में ।

लट घुँघराल अलक सिर सोहै तकिया मृदु तेहितर में ।।
सांझ कमल इव नींद लोचन अमृत ढरत अधर में ।
'स्नेहलता' सयन छवि झलकत रंग महल कोहवर में ।।

पद १३४

आज सुहाग की रात कोहबर रंग भरी ।
दुलहा माथे मउरिया सोहै, दुलहि गरे हीरा हार ।।
लाली पलंग पर लाली बिछौना सोवत दुलहा दुलार ।
दुलहिन हिया लगि सोवत दुलहा रंग बरसत वेसुमार ।।
दशरथ जु के कुमार छयल छवि निरखि-२ दृगहिय विचधार ।

पद १३५

जागो हे प्राण प्यारे राघो विहारी ।
अरुण उदय भये निसिके तिमिर गये विकसे कमन नयन राघो विहारी । मंगल थार लिये सुभगा जु हेमा श्रीमति कमला जी जय जय उचारी । पंलग पोशयै दोउ उठि बैठे, विथुरी माल मोतियन दुतिकारी । गोप्यअली अवलोकन, एक पलक परको नहिं टारी ।।

जगावन पद १३६

प्रातकाल सिय कोहबर द्वारे, मधुर मधुर सुर बाजत बीन ।
मृग नयनी सिय सखि पिक वयनी, चन्द्रकला आदिक सुप्रवीन ।
हिय उमगावत बेन बजावत, गावत भैरव राग प्रवीन ।
बार बार करवट है सोवत, लाल सकल आलस बस कीन ।।
मानहु सफल मनोरथ होकर, सोवत सुख से चिन्ता हीन ।

कबहुँ-कबहुँ पग पायल की धुनि खैंच लेत वर वसमन छीन ॥
स्नेहलता, चाहत अब जागन, रस-रस उचटन लागी नीन ।

जगावन पद २३७

सुरुज कीरणमा उगी अयलै भरी अंगनमा जागो ये जागो ।
मोरी सिया के सजनमा जागो ये जागो ॥
दरसन लागी ललचै लोभी ये नयनमा ।
नयना चयन दयनमा जागो ।
कीजै दन्त मंजन ले आई दतुअनमा ॥
अंग अंग उपटु उबटनमा ॥ जागो० ॥
कनक कलश भरे कमला जलन मा ।
करवाऊँ मौज से मंजन मा ॥ जागो० ॥
भूषण वसन साजी आँजी दु अंजन मा ।
मेटु नाम निरजन मा ॥
खोलु खोलु प्यारे अँखिया कंजन मा ।
मोद को प्रिय पर परन मा ॥ जागो० ॥

जगावन पद १३८

आबू आबू हे आली ललन जगला ।
विखडल केश लेपायल चानन, पसरल काजर रतिया बला ॥
अरुण नयन अलसाय निहारथि पल झपलाय नचत किछुकला।
मधुर मधुर मुसुकान मनोहर, केन देखि जगमोहत भला ॥
रतन जरित मणि चौकी राखल,उतरि उरि तेहिपर वैसला ।
'स्नेह' देख झटपट उठि दतमनि,कंचन झरि सलिल कमला ॥

पद १३९

क्या चला आता है मेरा बाँका बनरा बादशाह ।
जिस तरह बादल बहारें बरसने वाला बादशाह ।।
पैरों दस्त देखिये मेहदी से लाले लाल है ।
सारी पोशाकें सुरुख रूमाल वाला बादशाह ।।
शौक से सुरमा दिये फूलों का गजरा है गले ।
अश्वताजी रासवारी सेहरे वाला बादशाह ।।
शाह शाही जुल्फ हैं खूबसुर्ती से शोखी लिये ।
उमराव शाही शाहजादा है फैजाबाद वाला बादशाह ।
चश्म मिशले चूं गुलाबी रात का जागा हुआ ।
इस बनरे उपर वारूं दीन दुनियाँ बादशाह ।।
चलो सखि सखी श्याम से मिलना हमें जरूर है ।
श्यामसखे वेदस्त रे शमशीर वाला बादशाह ।।

पद १४०

दो०-महल बीच था हो रहा, बहुविधि हास विलास ।
एक सखी कहती हुई, अयो दुलह के पास ।।
हे कमल नयन रघुवंशमणी, सरकार बुलावा आया है !
चार पालकी द्वार लगे, अवधेश ने बुलावा पठाया है ।।
सुनि तुरत चले पितु पास सभी, अली बृन्द चली पीछे उनके।
द्वारे पर 'स्नेहलता' लतरी, निरखे अपने जीवन धन के ।।

जनवासा गमन पद १४१

जनवासा चले चारो भाई ।

रतन जड़ित अति सुखद पालकी सुन्दर विविध सजाई ।
चारु ललन चढ़ि चले मुदित मन निरखहि सखि समुदाई ।।
अगल बगल दोउ चवर ढुरावत वन्दी जन गुन गाई ।
जय जयकार करत सब पुरंजन बाजन बजत सुहाई ।।
जन मंडल जनवासा उमंड़े, आये प्रभु सुखदाई ।
स्नेह उमगि दशरथ मुख निरखहि दुलह वेश छवि छाई ।।

श्रीमिथिलेशजी लक्ष्मीनिधि भेजना पद १४२

भोर भये अपने कुमार को जनक बेगि बुलवाये ।
सुनि के पितु निदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये ।।
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेशू ।
गवनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्री अवध नरेशू ।।
विनय सुनाय राय दशरथ सों पाय रजाय सचेतू ।
आनहुँ चारिहुँ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू ।।
यह सुनि शीश नाय लक्ष्मीनिधि भरि उरमोद उमंगा ।
सखन समेत मन्द हँसि गवने चढ़ि चढ़ि चपल तुरंगा ।।
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे ।
मृदु मुसकात बतात परस्पर पहुँच गये जनवासे ।।
सखन सहित तहँ उतरि तुरंग ते मिथिलापति के वारे ।
चारिहुँ सुत युत अवधराज को सादर जाय जुहारे ।।
अति सुखनिधि लक्ष्मीनिधि को लखि सखन सहित सतकारे।।
रघुकुल दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ।

तेहि छिन सानुज निरखि राम छवि सखन सहित सुख साने।
लक्ष्मीनिधि मुख दरश पायके रामहुँ नैन जुड़ाने।
तब श्रीनिधि करजोरि भूप सों कोमल बैन उचारे।
करन कलेऊ हेतु पठाओ चारिहुँ राजदुलारे ।।
सुनि मृदु वचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसुकाने।
चारिहुँ कुँवर बुलाय बेगहीं विदा किये सुख माने ।।
रामबाम दिशि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं।
चंचल बागें किये तुरंग की बात करत मोहैं ।।

पद १४३

आगू आगू लक्ष्मीनिधि घोड़वा नचावे है दुलहा चलि आवे, घोड़वा नचावे दुलहा चार ।। घोड़वा के चाल देखि लाजेला गरुड़वा हे दु०, मोरवा लजाय लखि शृंगार ।। माथे मणि मौरिया तर उठले बदरवा हे दु०,कारी कारी जुलुफ घुंघुरार।। कोमल कपोलवा पर लटकै अलकनियाँ हेदु०,चमके चन्दनमाँ लिलार।।भृकुटि धनुषवा शर जुलुमी नयनमां हे दु०,प्रेमीजन नयना के शिकार।। निरखे सनेह ठाढ़ि महल दुअरिया हे दु०, बन्दीजन गावें जस हजार ।।

पद १४४

झमड़ैत आवे मिथिलेश के भवनमां हाय रे जियरा, दुलहा के रूप अनमोल ।। कारी कारी जुलुफी के ऊपर से मउरिया हाय०, झूलत बा कुण्डल कपोल ।। साँवर साँवर गोरे गोरे उमर बा बरोबर हाय०, केहू नइखे लागत मझोल।।

करत बा मन जे अकेले बतियैती हाय०, कहत 'भिखारी' परदा खोल ।।

जेवनार पद १४५

पुनि जेवनार भई बहु भांती । पठए जनक बोलाय बराती ।
परत पांवड़े बसन अनूपा । सुतन्ह समेत गवनै कियो भूपा ।
सादर सबके पाय पखारे । जथा जोग पीढ़न्ह बैठारे ।
धोए जनक अवधपति चरना । सील सनेह जाइ नहिं बरना ।
बहुरि राम पद पंकज धोए । जे हर हृदय कमल महँ गोए।
तीनिउ भाइ राम सम जानी । धोए चरन जनक निज पानी।
आसन उचित सबहिं नृप दीन्हें । बोलि सूपकारी सब लीन्हें ।
सादर लगे परन पनवारे । कनक कील मनि पान सँवारे ।।
दो०-सूपोदन सुरभी सरपि सुन्दर स्वाद पुनीत ।
छन महँ सबके परुसि गे चतुर सुआर बिनीत ।।
पंच कवल करि जेवन लागे । गारि गान सुनि अति अनुरागे ।
भांति अनेक परे पकवाने । सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने ।
परुसन लगे सुआर सुजाना । बिंजन विविध नाम को जाना ।
चारिभांति भोजन विधिगाई । एक एक विधि बरनि न जाई
छरस रुचिर बिंजन बहुजाती । एकएक रस अगनित भांति ।
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ।
समयसुहावनिगारिविराजा । हँसत राउ सुनि सहित समाजा
एहिविधि सबहीं भोजनकीन्हा । आदर सहित आचमनदीन्हा

दो०-देई पान पूजे जनक दसरथ सहित समाज।
जनवासेहिं गवने मुदित सकल भूप सिरताज।

बुझौवल

१-तीस चरण महि चलत नहिं श्रवण नयन छत्तीस।
सो तुम्हरी रक्षा करैं नौमुख देहिं असीस।।

उत्तर-सूर्य भगवान

१ २ ३

२-चकती सोहे बरुन पै बगहा पै असवार।
पला सहित कवि गंग कहे शुभ हो राजकुमार।।

उत्तर-१. च=चक्रसुदर्शन, क=कमण्डल, ती=त्रिशूल।
२. ब=ब्रह्मा, रु=रुद्र, न=नारायण।
३. व=बल, ग=गरुड़, हा=हस।

३-एक चिड़ैया अटक लटक के नदी किनारे चरती है।
चोंच तो उसकी सोने की है दुम से पानी पीती है।।

उत्तर-दीपक

४-बाप के नाम से पूत के नाम नाती नाम कछु और।
ई बुझौअल बूझ के दुलहा उठइहैं कौर।।

उत्तर-महुआ

जेवनार पद १४६

धन धन जीवन लेखो री रघुवर छवि देखो।
जेवन आय महानृप दशरथ, चारों सुत लिय संग रे,कि अनंग रे चहुँचन्द रे, मन फन्द रे,अखियाँ लखिके भई दंग रे, आली-

रूप निरेखो चरन पखारि बैठाय सुपीढ़न,पत्तल मनिनसँवारि दै, पै सुहारी दै, तरकारी दै, भसकारी दै, ता ऊपर रस गारी दै, पकवान अलेखो ।। जो न बरात पुरो नृप पाये, काहे न लाये निज जनियाँ को,हाँ बहिनियाँ को, फुफुअनियाँ को, कोउ हरत न उनकी जोबनियाँ को,अजमाय के पेखो । तिनसँ साठि नारि में इक नर, सत निबहन वर भारी हाँ, कबहूँ नहिं होति छुटकारी हाँ, जनकहिं दीजै दो चारी हाँ, होईहैं जगसुजस तिहारी हाँ, जो न राखति हो लगवारी हाँ, सुनि लागो नतेखो ।। गारि गाय सखि बलि बलि जावैं,चारों भैयन की गढ़नियाँ पै, सुमिलनियाँ पै, मुसुकनियां पै अति मोदित मोद तकनियाँ पै, परित्यागि निमेखो ।।

पद १४७

प्रिय पाहुन रुचि सँ जेमि लिए,छमि भूल चूक गुनि अबुधितिय अहाँक जोग किछु बनलो नै व्यंजन से बिचारि सकुचाइय जिय भावक भुखल स्वभाव अहांक सुनि पुनि पुनि अतिहुलसायहिय जानब तखन कहब अहाँ जखनहिं अमुक वस्तु कने और दिया किञ्चित बचन बजैत लजाई छी परमकृपालु कहाई छी किय जनि लजाउ निज कुलाचार पर सन्त सुखद अति अवध धिय मोदमुदित मनबिनती सुनावथि सिरकिनलखि लखि सिय पिय

पद १४८

प्यारे रसिया राजकिशोर ए प्यारे रसिया ।
जेमिय व्यंजन रुचिर हमारे ब्यंग वचन सुनि मोर।।

है अनूप गुन रूप तिहारे अचरज भरे अथोर।
हौ साँचे कि तो साँची कहिये प्रश्न के उत्तर मोर ॥
लोकपती तुमको बतलावैं, चारिहुँ श्रुति करि सोर।
रावरो बहिनि इहै लोकहिं में तिन पतिमें क्या निहोर
जगत पिता तुमको जग जानत मानत में नहिं खोर।
भय ताते निज पितहूँ को पितु चाल निराली तोर ॥
सब जग सार तुमहिं बतलावैं सन्तन मतो बटोर।
भरत लखन रिपुसूदनहूँ के सार में क्या तब जोर ॥
नाम पितामह को अज तेरो आपहुँ अज यह घोर।
मोदलता को बेगि बतइये सिय दूलह चितचोर ॥

पद १४९

जनि मनहिं लजाउ कनै और पाउ यो।
बनल अलोन सलोन जेहे किछु जानि गँवारि छमा छाउ यो।
प्रेमीजन चितवन मुसुकन हित तरसैत छथि तकि मुसुकाउयो
मिलत दहेज चाहब जे जे से ताइला उदासी जनि लाउयो ॥
मिललनि सीता दुहुँकुल तारनि हिनक आदर भाव हियलाउयो
हँसमुख पाहुन नीक कहाइ छथि हँसैत मोद हिय बसि जाउयो

पद १५०

तुम सकुचत कस चितचोर दुलहा रामजी लला।
जेंवहु व्यंजन रुचिर हमारे व्यंग वचन सुनि मोर।
तुम तो श्याम काम छबि लाजत मातु पिता कस गोर।
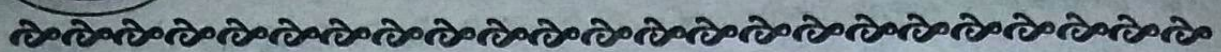
गारी ससुर पुर सुनि रघुनन्दन हँसत सुलखि मुख मोर।
कृपानिवास हरषि सखि गावैं जुरि जुरि सियाजू की ओर।

पद १५१

छयलवा को दैहौं चुनि चुनि गारी।
छप्पन भोग छतीसो ब्यंजन आनि धरी मणि थारी ॥
जेंवत लालन सिद्धि सदन में गावत सरहज गारी।
अति सुकुमारी राजकुमारी शान्ता बहिनी तुम्हारी ॥
देना तो चाहिए राजकुमर को लै भागे जटाधारी।
ऐसी रीति जो राजमहल की बाहर काह गुजारी ॥
लूटि न जावे अवधनगर की सिगरी कन्या कुमारी।
जेंवत लालन मृदु मुसुकावत सियाअली बलिहारी ॥

पद १५२

क्या अजब रंगदारी ललन ससुरारी की गारी।
बड़े भाग बना आये जनकपुर पाये सरहज सारी ॥
प्राणहुँ ते प्रिय पाहुन मेरे सुनिये बात हमारी।
शोभा धाम श्याम सुन्दर वर रूप अनूप तिहारी ॥
कैसे बची होएंगी तुमसे अवधपुरी की नारी।
औरो बात सही मैं जानति तुव कुल की उजियारी ॥
अति उदार मुनिजन जेहि जाँचत ऐसी बहिनी तुम्हारी।
जिनकी चाह करत सारे जग तिनकी का रखवारी ॥
मिथिलापुर की गलिन गलिन में विहरैं शान्ता कुमारी।
सियाअली निज बहिनी के गुन लीजै हिय में बिचारी ॥

पद १५३

पाहुन कहू कोना, गुन सुनि सुनि मन सकुचाय ।
अहांक बहिनि सँ जे नेह करैय सेहे अहाँ के सोहाइय ।।
जकरा पर अहाँ नजरि करैं छी तकरे गर लपटाइय ।
लोक लाज कुल कानि अपनपौ कनैंक कनैंक क खाइय ।।
तब कुल कन्या परम विलक्षणि, कनिको नैं सरमाइय ।
एक़ पुरुष संग सुख नैं करैए, तीनू लोक बौआइय ।।
नख सिख सुखमा देखि अहाँ के, काम बेकाम बुझाइय ।
मोद अवध के नागरि अनतहु, कुलटा बनि उनि जाइय ।।

पद १५४

गारी खूब सुनैबै छयल अलबेला ललाजू ।
दृग पुतरिन को पीढ़ा बनैबै, अँखियन महँ बैठैबै ।
छरस रुचिर छत्तीसहुँ व्यंजन हित सों आनि जिमैबै ।।
ससुरारी की गारी है प्यारी सुनि सुनि के न लजैबै ।
एके बहिन आपके लालन हम पूछैं केहि देबै ।।
केते जतन करत हैं मुनिजन तुव बहिनी के पैबै ।
बिनु शान्ती सुख लहत न काहू झूठ तनिक का कहबै ।।
सब जग चाह करत शान्ताजू को कहँ कहँ उनहिं पठैबै ।
दीजै बहिन दान मिथिला में सियाअली यश पैबै ।।

पद १५५

गारी गावत राजदुलारी जेवत रामजी लला ।
रतन सिंहासन तापर आसन राजत अवध विहारी ।।

चारो भैया मिलि जेंवन लागे देत सखी सब गारी ॥
खाजा खुरमा तपत जलेबी पापर पुआ सुहारी ।
आपहुँ जेवे भरत जी से पूछे लाल कैसी बनी है तरतारी
ठनगन लखन करत मड़वा पर किछु लागत नेग हमारी ।
हीरा मोतिन लाल जवाहिर सम्पति सकल तुम्हारी ॥
सोर भयो चहुँओर जनकपुर धाये सकल नर नारी ।
प्रिया सखी वारति तन मन धन सुन्दर रूप निहारी ॥

पद १५६

रघुबर सुनिये मधुर सुर गारियाँ ।
मैया तुम्हारी अधिक सुकुमारी काम विवस मतवारियाँ ॥
मामी वो मौसी फुफा तुम्हारी इनकी प्रसिद्ध कुचालियाँ ।
मामी तुम्हारी कुमग पर नाचे लोग हँसे दै तारियां ॥
बहिनी तुम्हारी वाग विच विहरे प्यार करै सब मालियाँ ।
सारी अवध की नारी छिनारी यार बुलावैं अटारियाँ ।
'हरिजन' हरषि हरषि सखि गावति यहि विधि सरहज सारियां

पद १५७

जेमथि रसिक विहारी, मुरित मन सुनि सुनि के गारी ।
व्यंजन विविध भाँति सँ परसल, जगमग मणिन के थारी ॥
रतन जड़ित बाटो भरि अगनित, साग परम रुचि कारी ।
जेमथि विहँसि लली संग लालन गान करथि नव नारी ॥
काम कला में कुशल अवध तिय पुरुष सुनै छी अनारी ।
तृप्ति ने पावि सकल जग बिहरथि मदन विवश मत्तवारी ॥

संत जन के सुकृत अहाँ कैलहुँ, मिथिला में भेल सरोकारी।
दुलहिन एहन अनत प वितहुँ, पद्मलता संन सारी ।।

पद १५८

जेमु जेमू लली वर श्याम सुन्दर, इ स्वाद अनत नहिं पायब यो। छथि पाक कुशल मिथिलानी सकल,बहु व्यंजन कतेक गनायब यो ।। मुख कौर धरब मुसुकैत रहब, हम अलिगण नयन जुड़ायब यो। जे बस्तु चाहब मधुरे सँ कहब, हम हर्षित आनि जेमायब यो ।। जौ लाज करब बर हानि लहब, सकुचैत भूखल रहि जायब यो। छथि सारि सकल छवि रंग रंगल, हम रस गारि गारि सुनायब यो ।। वर सँत सेवल जग भ्रमैत रहल, मिथिलापुर शान्ति बसायब यो। ससुरारि भेटल अनुराग भरल, से भाव हिया बिच लायब यो ।। लली प्रेम पगल छथि मनसँ ढरल,निज भाग्यक धन्य मनायब यो। भुज अंश धरब संग जेमैत रहब, लखि 'पद्म-लता' बलिजायब यो ।।

पद १५९

मत मनिहउ मन में बुरा हमार सुनि बात हो रघुनन्दन।
ई गारी हैउ ससुरारी के सौगात हो रघुनन्दन ।।
कच्ची पक्की और सिहै हम तो चटनी चुरन।
लगे चटपटी जगै भुख सुठि व्यंजन रुचै हुजुरन ।।
जानत वानी गोरकु लगिहै आँखि चढ़ाकै घुरन।
तबहुँ ना हम बन्द करबि जब तक न बोलवहु पुरन ।।

चाहै बैठल बीते सारी रात हो रघुनन्दन ।
'अब नारायण' दिसि सैनिन हाहा खात हो रघुनन्दन ।।

पद १६०

चितलाय सुनहु चितचोर, छैल धनुधारी अवधविहारी ।
सारी सरहज को प्रेम भरी रस गारी अवध विहारी ।।
और वस्तु तो सुलभ अनतहुँ यह तो सुलभ यहाँ ही ।
यह रस स्वाद मधुर गारी को और ठौर कहुँ नाही ।।
चनि चुनि हम तब गुन गन गावहिं सुनहु गुनहु मनमाही।
कबहुँ रसिक सुनि हँसहि ठठाके कबहुँ मंद मुसुकाही ।।
नित रहै बिलसती यह विनोद कोहवर अवधविहारी ।
अब 'नारायण' उर बसहु सहित सिय प्यारी अवधविहारी

पद १६१

पाहुन अहाँक जेवनार यो देखि किछु ने फुरैए ।
व्यंजनक ऐछ भरमार यो केयो गनि नय सकैए ।।
कुन्द पुष्प सन भात लगैए, राहरिक दाल स्वर्ण झलकैए ।
ताहि पर सँ देल घृत ढारि यो,कते गम गम करैए।। अदौरी दनौरी तिलौरी फुलौरी,मिथिला में सब सँ प्रसिद्ध कुम्हरौरी बड़ा बड़ीक सँचार यो, सेहो देखिते बनैए ।। रंग विरंगक भुजिया भाजा, पापड़ लगैए जेना टटके खाजा अगनित चटनी अँचार यो, जिय चटपट करैए ।। भाँति-भाँति के साग रुचिकारी, षटरस मधुरस सब गुनकारी मिथिलाक ऐहे व्यवहार यो, किय अचरज लगैए ।। मालपुआ हलुआ

और पूड़ी कचौड़ी,दही चीनी खोआ सकरौरी मधुरक लागल कतार यो, आँखि अहूँ के गरैए ।। रुचिरुचि जेमू कियक सकुचाई छी, चारिहु भैया के हम चकिते देखै छी, छी आहाँ भदेसक गमारयो, 'पटरानी' कहैए ।।

पद १६२

चोट मारत मउरिया की ओट दुलहा ।
खात खोया और मलाई पूआ पापर मिठाई ।।
ता ऊपर से मंगावे दालमोट दुलहा ।
पहिरे जामा जोड़ा कोट कितने प्रेमी जैहे लोंट,
आज तोहि पै भजें हैं गिन्नी नोट दुलहा ।।
मनमोहन सरकार रौआ बड़ा हैं उदार ।
दीजै शान्ती सवाल यही छोट दुलहा ।।
मोहन मन न समाय और भजन उपाय ।
दीजै सरण सहाय लीजै चरण बसाय ।।
जावें बार-बार चरण पे लोट दुलहा ।।

❀ नित्य जेवनार ❀

पद १६३

रघुवर जेंवत जानि एक सखी अंचल दै हँसि बोली जू ।
सुनहु लाल तुम काके जाये सत्य कहहु सब खोली जू ।।
सुनहु प्रिया हम नृप दशरथ के जासु सुयश श्रुति गावैं जू ।
भूपति गौर श्याम तुम लालन हम कैसे पतियावें जू ।।

सुनहु चतुरि हम श्याम न होते को श्रृङ्गार रस गावैं जू।
हमरे श्रीजनकललली रस के रस बिनु बोले पिय आयो जू।।
कहहु कमल मकरन्द मधुर हित भँवरहिं कौन बुलावै जू।
रामचरण सखि मरम वचन सुनि सब सखियाँ मुसुकावैं जू।।

पद १६४

सुनिये रसिकराय रघुनन्दन प्रीति रीति युत गारी जू।
तुम तो श्याम स्वामिनी मम गोरी यह अचरज बड़भारी जू।।
जो पै लाल आप रुचि होवे तो हम बात बिचारी जू।
कछुक काल मिथिला में रहिये होय नागरि सुकुमारी जू।।
श्रीलक्ष्मीनिधि के महलन में रहिये रूप उजियारी जू।
मन भावतो टहल पिय करिये श्रीसिधि के रुचिकारी जू।।
तब तुम गौर वरन पिय पैहो मम स्वामिनि अनुहारी जू।
हँसि हँसि कहहिं परसपर सब मिलि सुखद सुखेन बिचारी जू
सुनि मुख मोरि हँसत रघुनन्दन कामदेन्द्र बलिहारी जू।।

पद १६५

मिलि जेंवत श्रीरघुवीर बने सखि संग लिये मिथिलेश लली।
भुज अंश दिये बहियाँ जु लसैं विहसैं मृदु मंजु अनंग रली।।
करि कौर सिया मुख देत पिया कहि स्वाद सराहत भाँति भली
रस के निधि दम्पति रंग भरे निरखैं चहुँओर किशोर अली।
मणि मंदिर में झलकै प्रतिबिम्ब मनोज के मानो विहार थली
श्रीअवधपुर नित्य विहार करैं लखि अग्रअलीजू की आसफली

पद १६६

दोउ जेंवत हास विनोद मगन रस रंग उमंग अंग अंग बरसै ।
परसि परस्पर स्वातिक भाँतिक ग्रास उठे मुख ना परसैं ।।
स्वकर सुधारस कौर सिया को राम जिमावत हित दरसैं ।
दृगकोर सिहाय सुभाग भरे कर चूमि महा हिय में हरषैं ।।
गीत वाद्य नव तान तरंगनि संग सुहागिनि सुख सरसैं ।
कृपानिवास प्रसाद मिलै मोहि जाको महामुनि मन तरसे ।।

पद १६७

मिलि जेंवत प्रीतम संग सिया दोउ मंगल मोद बढ़ावैं हो ।
कौर परस्पर देत चन्द्रमुख मन्द मन्द मुसुक्यावैं हो ।।
भोजन बिबिध परोसति विमला कमला विजन डुलावैं हो ।
सोभा सिन्धु कही न परै कछु माधुरी कुँज सुहावैं हो ।।
चन्द्रकला सखि झारि लिये कर सरयू जल अँचवावैं हो ।
रामसखे प्रभु थार प्रसादी रह्यो अवशेष सु पावैं हो ।।

पद १६८

मिलि जेंवत श्रीरघुनन्द सिया हिय निरखिनिरखि सखि मोदभरैं
बैठे रतन जड़ित मणि पीड़न घन दामिनि दुति मन्द करैं ।
व्यंजन विविध सुधारि सुघर सखि कर कमलनि मणिथारधरैं
परसत गान करत पिक बैनी मधुर मधुर मृदुसप्त सुरैं ।।
कोउ कर पानि पात्र मणि झारी सुन्दर सरयू नीर भरैं ।
पिय प्यारी मुख चितवत सब अलि देत जबै चित चाह करैं ।

कौर सुधारि परस्पर शशि मुख देत जबै छवि कहि न परैं ।।
रसिकअली यह रस अद्भुत दृग निरखि न्यौछावरि प्रान करें

पद १६९

भोजन करत भावते जीके।
अरस परस दोउ खात खवावत सो सुख जानत लोचनही के।
कीन्हों कछुक मनोरथ प्रीतम देत बनाइ ग्रास मुख सी के ।।
हँसि चितई भरि नयन माधुरी रहि गयो कौर हाथ ही पी के
पंच भाव तर यह रस दुर्लभ सों सुख जानत अलिगन नीके ।।
हरि सहचरी मनोरथ मनके कृपा साध्य मिथिलेश लली के।

पद १७०

मिलि जेंवत श्रीरघुनन्द सिया दोउ नवल माधुरी कुंज लसैं।
रस मत्त परस्पर रूप छके करकंज कौर मुख देत हँसैं ।।
बहु व्यँजन भाँति अनेक बने षट चारि अमी रस लै परसें।
नव वैस किशोरी चहुँदिशि घेरी बाल खड़ी नव रस बरसैं ।।
अनुराग भरी रस रूप छकी मुसुक्यान मनोहर चित्त ग्रसैं।
सुख सिन्धु अभी बिच रामसखे मन मीन रसिक छवि जालफसैं

आचवन पद १७१

आचवन करत मुदित पिय प्यारी।
निरम नीर मधुर सरयु को भरि शुचि कंचन झारी।
करि अचमन सिंहासन बैठे, सखियन सौज सवारी ।।
हँसि हँसि पान पवावहि विमला तन मन धन वारी।
'मौनसकल' त्रिभुषण की शोभा हरषि निरखिसखि बलिहारी
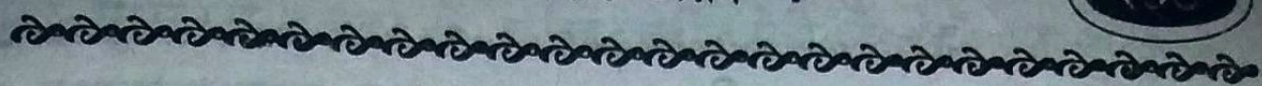
पान पवाना पद १७२

रंगीले लाल बीढ़ी लीजै मेरे करसे ।
नागर पान सुगंध सुपारी मधुर मासाला सरसे ।
मोती के चुना मनहर कत्था पावत अति हिय हरसे ।
'अग्रअली' सिय पिय मुख दीन्हीं अधरन पर रंग नरसे ।

डोमिन की बेटी का पद १७३

हमरा लेने चलियो दुलहा रामजी अवध नगरी । बहुत दिनन से आस लगाओ लखहि हो रामजी पियर चुनरी । नित उठि सियजु के मुहमा निरखेव रखव हो रामजी तोहर मरजी ।। सरयु के तीर डगर बहारब पुरव हो रामजी हमर मरजी ।।

पद १७४

आचमन करत राम सिय प्यारी ।
श्यामा पान लिये कर ठाढ़ी रामा लिये जल झारी ।।
चन्द्रवती खर्का दर्पण लिये चन्द्रकला सुकुमारी ।।
सुभगा लिये वागौ प्रीतम को सहचरि लिये सिय सारी ।
करि आचमन बैठे सुख आसन सकल जनन सुखकारी ।
रामसखे बलि बलि दम्पति छवि सुन्दर बदन निहारी ।।

पद १७५

भोजन करि बैठे पावत पान ।
गोरी नवल किशोरी सियाजू प्रीतम श्याम सुजान ।
कोउ अलि फूल माल पहिरावति अतर करावति घ्रान ।

बीरी बदन अधर छबि छलकत मन्द मन्द मुसुकान ।
प्रीतम हँसि प्यारी तन हेरत अरुण नयन अलसान ।
प्यारी कर गहि उठे लाल तब रसिकअली सुखदान ।।

मिथिला के ड़ोम का पद १७६

डोमवा कवरवा धैले ठाढ़े हो लाल ।
बहुत दिनन से दुलहा आसा लगौले बानी, से दिनमां आजु मोरा आइल हो लाल ।। इ तो जुग जुग से बबुआ हमरे चलि आवे से अबकी के पारी हमार हो लाल ।। एहो जूठन के बबुआ सुर नर मुनि तरसे से भगतन के होला अधिकार हो लाल ।। कुरमिन बारिन इत उत चितबे दुलहा पत्तल हमरो चोरैहैं हो लाल ।। कर जोरि जोरि दुलहा विनती करत बानी डोमवा के आपन करि जनिह हो लाल ।। कहथिन रामा भक्त आशा चरण के दुलहा नेक नयनमां तनि हेरिह हो लाल ।।

मिथिला की डोमिन का पद १७७

ए दुलहा आपे से लागी नजरिया, तोपर मैं वारी सँवरिया ।
शिर पर चीरा कमर पट पीरा पहिरे जामा केशरिया ।।
गले बीच हीरा चभत मुख बीरा चिहँसत करे कहरिया ।
छैला छबीला रंगीला नुकीला ओढ़े गुलाबी चदरिया ।।
भौंह कमान तान नैन बान मारे भरि भरि के काजर जहरिया
मिथिलाकी डोमिन अवध में बसवों जूठन बटोरब भर थरिया

अधर सुधारस दुलहा के चखि चखि ऐसे बितैहौं उमरिया।
अब राउर पिछवा ना छोड़बो चलबो मैं अवध नगरिया।।
नौशे छबी बिलोकत रहबो घर आँगन कचहरिया।
सरयू स्नान जब जैहौं सियावर साँझ सबेरे दुपहरिया।।
महावर चरण प्रभु निरखत रहबों अँचरन बहारब डगरिया
रंग महल के टहल बजइबो बिन बिन डगरा दउरिया।
नेहलता दुलहा छबि निरखत प्राण जीवन धनु धरिया।।

विदाई प्रकरण बारहमासा पद १७८

अब छाड़ि ससुरारि कहाँ जैहौं सरकार, पिया रहि जइअउ मिथिला नगरिया में। अब आयल पूस मास, हिय अतिहिं हुलास, सब साजु सुख रास ससुररिया में।। माघ शिशिर सुहाई, लइहौं प्रेम की रजाई, जाड़ा लगने न दूंगी बेअरिया में।। फागुन फगुवा खेलायब, रंग घोरिक ले आयब, रंग भरि-भरि रंगिहौं पिचकरिया में।। चैतमास रितुराज, फूले कुसुम दराज, गजरा गूथि गूथि गेरिहौं सुगरिया में।। माह आयउ बैशाख, तन तलफन लाग, छयला तोहिको छिपइहौं छतरिया में।। जेठ तपतल बात, घाम सहलो न जात पिया चलने न दूंगी डगरिया में।। माह आयउ अषाढ़ बुन्द बरिषै अपार, छटा घाट के लखइहौं कोठरिया में।। आई सावन की बहार, करिहौं झूला के तैयार, झूला झुलइहौं मैं लली फुलवरिया में।। भादव भरे नदी नार, नौका रचिहौं सँवार

झुमि झुमि झिझरी खेलैहौं कमला सरिया में ॥ आसिन सरद बहार चन्द चाँदनी झलकार, रास रचैहौं मैं कंचन मझरिया में ॥ कातिक द्वुतिया मनायब, शान्ती एतहीं बोलायब, बजरी मोदक पबैहौं मणि थरिया में ॥ अगहन उत्सव रचायब, गारी दे दे के जेमायब, मोद अस कहाँ जस ससुररिया में ॥

पद १७९

व्याह चतुर्थी आज आनन्द लहिये सखी ।
चारो दम्पति मुखचन्द्र चन्द्रिका चख चखी ॥
एक एक आसन द्वै द्वै दिव्य सुहात हैं ।
गौर श्याम अरु श्याम गौर लखात हैं ॥
राज महल के चहल पहल न परै कही ।
कंगन छोरा छोरी आज होइहैं सही ॥
सीय सहेलिनि आनन्द उर न अमात हैं ।
नौशय रंग रंगी रंग प्रगट लखात हैं ॥
जोइ जोइ कहहिं सुआसिनि व्यंग रहस भरी ।
चारो दम्पति सोइ सोइ करहिं परबस परी ॥

पद १८०

गजब बनी गुण खानि ये सियाजू की कंगनियाँ ।
छोरनि कलानिधान कंगन छोरत हारे भूलि गये सब अभिमनियाँ ।शिवधनु तोड़ि अभिमानी बनि आयो वर मिटि गयो गर्व गुमनियाँ । गाँठ मरम नहिं पाये नवल वर छोरत

परत उलझनियाँ। 'योगेश्वर' जीवन धन हारि हिय लली जू की जोहैं चितवनियाँ ।।

पाटी धराई पद १८१

ऐ अलबेलो लाल ! कौन सिखायो यह चाल ।।

छोरू छोरू प्यारे पाटी, दीजै सँवारन चोटी, सिय प्यारी भाल, जेहि लखि चन्दहुँ के हिय साल ।। मनमाना नेग जौ लौ पैहौं न तजिहौं तौ लौं, मिथिलानी बाल, हों मेरे सखन हिय माल ।। सुनि बैन सुख रासी, परेउ हहा के हाँसी, ह्वै के निहाल, गावन लागी अलिन उताल ।। सासु मना दुलारे, सारिन मनाइ हारे, हठीले चाल, लखि सरहोज मनाई चूमि गाल । लखि हठ भार 'मोद' कीनी स्वीकार, श्रीदशस्यन्दन लाल, मन्द मुसुकि किय कमाल ।

चोटी गुथाई पद १८२

प्रिय पाहुन ! चिकुर सम्हारू, कोमल छथि प्यारी हमर ।
मणि कंघी सँ नहुँ नहुँ झारू, कोमल छथि प्यारी हमर ।।
रेशम से बढ़ि केश हिनक छनि, कने तेल चमेलीक ढारू ।
मणि मुक्ता के चोटी गुथल छनि, कने अपन कला सँ सम्हारू।
बेनी गुथि सिन्दुर बिन्दी दै, कने लली मुखचन्द्र निहारू ।।
'पद्मलता' यहि माधुरी सुरति पर, कने तन मन धन न्यौछारू

पद १८३

पिया हंसि सिय को घुंघट टारो।
उघरत ही अस छबि दरसोहै, मोहि गयो लखि अवध दुलारो

सियमुख मुकुर माँहि निज मुख को, देखि चकित भयो प्रीतम प्यारो। रूप गुमान छाँड़ि ताही छिन, निरखत नैन निमेष निवारो। मोहनि नव रस माँहि दोउन को, मिलिगो दृग सों दृग रिझवारो।।

पद १८४

प्यारी जू प्रीतम अहाँक प्रेम बस कहु की की नै करैछथि ये।
अनुछन छटा छकैत रहैछथि एक टक पल न टरैछथि ये।।
छथि अव्यक्त व्यक्त बनि चरण अलक्त भरै छथि ये।
अति आशक्त जकाँ उन्मत्त जकाँ मस्तको धरै छथि ये।।
पाटी सिटै छथि चोटी गुहै छथि टुटक डरै छथि ये।
अपना जुलुफ सँ सौगुन कोमल हिय गुनि लाज मरै छथि ये।।
लीलहुँ कृपा कोर मोरिते पद पद्म परै छथि ये।
सीता जापक जन के ऊपर अतिशय 'मोद' ढरै छथि ये।।

पद १८५

श्रीसिय प्यारी ये, परम मंजु अथि आहाँक कंज दृग कोर।
प्रीतम टकाटकी लगौनहिं रहै छथि,बनि मुखचन्दक चकोर।
कर पर चादर चरण धरि सादर,चित्रित करै चथि चितचोर
परम सौभाग्य गुनि आनन्द झुमैछथि,चुमै छथि प्रेम विभोर।
मकुका कपोल कण्ठ केशर कस्तूरी, ठगै छथि तिल दै सुठोर।
उमगि उमगि अंगराग रंगैछथि, रङ्गि अनङ्ग रस बोर।।
ततसुख सुखी रुख रखिते रहैछथि, नैनहिं भरने निहोर।
नख सिख साजहीं में हाजिर रहैछथि, 'मोद'रसिक सिरमोर

पद १८६

प्रीतम प्यारी अहाँक अनन्या ।
रोम रोम श्यामें रंग रंगलनि त्यागि सकल रंग अन्या ।
श्याम वसन तन श्याम कंचुकी श्याम वरांक लसन्या ।।
अंजन पलक पूतरी श्यामहिं श्याम बिन्दु अधरन्या ।।
श्याम मिलनहित सादर पुजलनि गणपति गिरिपति कन्या
पल पल प्रेम प्राण पन ठनलनि सहज सुशील शरन्या ।।
कंचन विपिन में कोरि मँगोलनि सहित प्रमोद रमन्या ।
'मोद' प्रेम पथ में श्रीमैथिलि अहाँ सँ सौगुन धन्या ।।

पद १८७

प्रीतम बड़ प्रेमी छथि प्यारी ।
तव अनुराग रंग नयननि में छैन छायल अरुणारी ।
पीत रंग कटि वसन रुचै छैन पीत उपरना धारी ।
पीत यज्ञ उपवीत विलोकिऔन पीतहिं खौर सम्हारी ।।
सी सुनिते सम्भ्रम दौड़ै छथि ता ततक्षण सब छारी ।
सीता जापक जन पर होइछथि बार बार बलिहारी ।।
अधरहिं धैने सदा रहै छथि रसिकराज रसकारी ।
रहिऔन अहूँ सदा रुख रखिते रुख राखनि सुकुमारी ।।
ई छी अहाँ कि ओहे अहाँछी ई अगम्य गति न्यारी ।
पगल प्रमोद 'मोद' मन्दिर में निबसू सदा सुखारी ।।

श्री गिरिजा जी की आरती पद १८८

अही के दया सेई सुमंगल देख लौं ए महारानी गिरिजा ।